ज़रूरतुल इमाम

(इमाम की आवश्यकता)

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान

(इमाम की आवश्यकता)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी–ए–मा'हूद

नाम किताब	ज़रूरतुल इमाम (इमाम की आवश्यकता)
Name of Book	*ZAROORAT-UL-IMAM*
लेखक	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
Writer	*Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani*
अनुवादक	अन्सार अहमद, बी.ए.बी.एड, मौलवी फ़ाज़िल
Translator	*Ansar Ahmad, B.A.B.Ed, Moulvi Fazil*
प्रकाशन वर्ष	प्रथम हिन्दी संस्करण-2012
Year	*1st Hindi Edition-2012*
संख्या	
Number of Copy	*1000*
मुद्रक	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान
Press	*Fazle-Umar Printing Press, Qadian* *Distt Gurdaspur Punjab*
प्रकाशक	नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान
Printer	*Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian* *Mohalla Ahmadiyya, Qadian* *Distt Gurdaspur Punjab PIN:143516*

ISBN Number *978-81-7912-366-9*

पुस्तक में Ⓟ चिन्ह का प्रयोग लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तक के प्रथम संस्करण के पृष्ठों की स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए किया गया है। -प्रकाशक

ٹائیٹل بار اول

يا ايها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا اليه الوسيلة وجاهدوا في سبيله لعلكم تفلحون

ويقول الذين كفروا لست مرسلا

قل كفى بالله شهيدا بيني وبينكم ومن عنده علم الكتاب

الحمد لله

کہ یہ رسالہ جس کا نام ہے

ضرورۃ الامام

صرف ڈیڑھ دن میں طیار ہو کر

مطبع

ضیاء الاسلام قادیان میں

قیمت ۲ر محصول علاوہ جلد

प्रकाशक की ओर से

मुसलमानों की उम्मत की समस्त उन्नति चाहे वह सांसारिक हो या आध्यात्मिक इमाम से सम्बद्धता पर निर्भर है। ख़ुदा के वादों और नबी करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद व महदी-ए-माहूद और इस युग का इमाम बना कर अवतरित किया है। आप ने 1891ई. में अल्लाह तआला से सूचना पाकर यह दावा किया कि आंहज़रत (स.अ.व.) की दासता और अनुसरण में मुझे मसीह मौऊद और इमाम महदी बना कर भेजा गया है। चौदहवीं सदी हिज्री का प्रारम्भ था और मुसलमानों की बहुत दयनीय अवस्था थी, मुसलमान तो थे परन्तु मात्र नाम के। उनके ईमान और अमल की कमज़ोरियों को देखकर ईसाइयत और अन्य धर्म चारों ओर से इस्लाम पर आक्रमण कर रहे थे। युग स्वयं यह मांग कर रहा था कि कोई आने वाला आए और इस्लाम का समर्थन करे और इस्लाम संसार में एक नया जीवन पैदा करे और इस्लाम की शत्रु शक्तियों का विनाश करे। उम्मते मुहम्मदिया के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के मतभेदों को समाप्त करके उम्मत को एक बार पुनः सदमार्ग का मार्ग-दर्शन करे और सुरैया सितारे पर पहुँचे ईमान को संसार में पुनः वापस लाए। यही वह युग है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने उम्मत के सुधार के उद्देश्य से अवतरित किया और आप ने अवतरित होने का उद्देश्य यह बताया कि समस्त संसार को इस्लाम और मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) तथा क़ुर्आन करीम के झण्डे के नीचे एकत्र करना है।

अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा को हिदायत दे और अन्तिम युग के इमाम को पहचानने तथा आप की बैअत करके आध्यात्मिक वरदानों और बरकतों से लाभान्वित होने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

यह पुस्तक ज़रूरतुल इमाम (इमाम की आवश्यकता) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम ने 1897 ई. में लिखी जिसमें आपने बताया कि युग का इमाम कौन होता है? उसके लक्षण क्या हैं तथा उसे दूसरे मुल्हमों, स्वप्न दृष्टाओं और कश्फ़ वालों पर क्या प्रमुखता प्राप्त है तथा युग के इमाम को स्वीकार करना क्यों आवश्यक है।

जमाअत अहमदिया के पंचम ख़लीफ़ा की अनुमति से नज़ारत नश्र-व-इशाअत क़ादियान इस पुस्तक को जन-हिताय प्रकाशित कर रही है। अल्लाह तआला हम सब को हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की इस उत्तम पुस्तक को यथोचित लाभ प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे और प्रत्येक व्यक्ति को समय के इमाम को पहचान कर आप को स्वीकार करने और जमाअत अहमदिया में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्रदान करे। आमीन

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र-व-इशाअत
क़ादियान

इमाम की आवश्यकता

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الحمد للّٰه وسلام علی عباده الذین اصطفٰی

तत्पश्चात स्पष्ट हो कि सही हदीस☆ से सिद्ध है कि जो व्यक्ति अपने युग के इमाम को न पहचाने उसकी मृत्यु अज्ञानता की मृत्यु होती है। यह हदीस एक संयमी के हृदय को युग के इमाम का अभिलाषी बनाने के लिए पर्याप्त हो सकती है, क्योंकि अज्ञानता की मृत्यु एक ऐसा पूर्णतम दुर्भाग्य है जिस से कोई बुराई और भाग्यहीनता बाहर नहीं। अत: नबी करीम (स.अ.व.) की इस वसीयत के अनुसार आवश्यक हुआ कि प्रत्येक सत्याभिलाषी सच्चे इमाम की खोज में तत्पर रहे। ☆

यह सही नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति जिसे कोई सच्चा स्वप्न आए अथवा उस पर इल्हाम का द्वार खुला हो वह इस नाम से नामित हो सकता है अपितु इमाम की वास्तविकता कोई अन्य सार-संग्रह और बहुगुणसम्पन्न अवस्था है जिसके कारण आकाश पर उस का नाम इमाम है? यह तो स्पष्ट है कि केवल संयम और शुद्धता के कारण कोई व्यक्ति इमाम नहीं कहला सकता। अल्लाह तआला फ़रमाता है[1] وَ اجۡعَلۡنَا لِلۡمُتَّقِیۡنَ اِمَامًا अत:

☆ حدثنا عبدالله حدثنا ابی حدثنا اسود بن عامر انابوبکر عن عاصم عن ابی صالح عن معاویة قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم من مات بغیر امام مات میتة جاهلیة صفحه نمبر ۹۶ جلدنمبر ۴ مسند احمد و اخرجه احمد والترمذی و ابن خزیمة و ابن حبان و صححه من حدیث الحارث الاشعری بلفظ من مات ولیس علیه امام جماعة فان موتته موتة جاهلیة. ورواه الحاکم من حدیث بن عمرو من حدیث معاویة و رواه البزّار من حدیث ابن عباس.

[1] अल्फ़ुरक़ान-75

यदि प्रत्येक संयमी इमाम है तो फिर समस्त संयमी मोमिन इमाम ही हुए, तथा वह बात आयत के आशय के विपरीत है और इसी प्रकार क़ुर्आन करीम के स्पष्ट आदेश के अनुसार प्रत्येक मुल्हम (जिस पर इल्हाम होता हो) और सच्चे स्वप्न देखने वाला इमाम नहीं हो सकता, क्योंकि क़ुर्आन करीम में सामान्य मोमिनों के लिए यह शुभ सन्देश है कि لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا① अर्थात सांसारिक जीवन में मोमिनों को यह नेमत प्राप्त होगी कि उन्हें अधिकांश सच्चे स्वप्न आया करेंगे अथवा उन्हें सच्चे इल्हाम हुआ करेंगे। फिर क़ुर्आन करीम में एक अन्य स्थान पर है- اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا②

3Ⓟ Ⓟअर्थात जो लोग अल्लाह पर ईमान लाते हैं और फिर ईमान पर दृढ़ रहते हैं फ़रिश्ते उन्हें शुभ संदेश के इल्हाम सुनाते रहते हैं और उन्हें सान्त्वना देते रहते हैं, जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मां को इल्हाम द्वारा सांत्वना दी गई, परन्तु क़ुर्आन स्पष्ट कर रहा है कि इस प्रकार के इल्हाम या स्वप्न सामान्य मोमिनों के लिए एक आध्यात्मिक नेमत है चाहे वे पुरुष हों या स्त्री हों तथा उन इल्हामों को पाने से वे लोग समय के इमाम से निस्पृह नहीं हो सकते और प्राय: ये इल्हाम उन की व्यक्तिगत बातों से संबंधित होते हैं तथा उनके द्वारा ज्ञानों का लाभ नहीं होता और न किसी बड़े मुकाबले का निमन्त्रण देने योग्य अपितु बहुधा ठोकर का कारण हो जाते हैं। जब तक इमाम की सहायता ज्ञानों का वरदान न करे तब तक ख़तरों से अमन कदापि कदापि नहीं होता। इस बात की साक्ष्य इस्लाम के प्रारम्भिक युग में ही उपलब्ध है, क्योंकि एक व्यक्ति जो क़ुर्आन करीम का लिपिक था उसे प्राय: नुबुव्वत के प्रकाश की निकटता के कारण क़ुर्आनी आयत का उस समय में इल्हाम हो जाता था जबकि इमाम अर्थात् नबी अलैहिस्सलाम वह आयत लिखवाना चाहते थे। एक दिन उसने सोचा कि मुझ में और रसूलुल्लाह (स.अ.व.) में क्या अन्तर है, मुझे भी इल्हाम होता

①-यूनुस-65 ②-हामीम अस्सज्दह-31

है। इस विचार से वह तबाह किया गया और लिखा है कि क़ब्र ने भी उसे बाहर फेंक दिया जैसा कि बलअम बाऊर तबाह किया गया। उमर[रज़ि.] को भी इल्हाम होता था। उन्होंने स्वयं को कुछ भी न समझा और सच्ची इमामत जो आकाश के ख़ुदा ने पृथ्वी पर स्थापित की थी उस का भागीदार बनना न चाहा अपितु स्वयं को एक तुच्छ सेवक और दास ठहराया। इसलिए ख़ुदा की कृपा ने उन्हें सच्ची इमामत का नायब बना दिया तथा उवैस क़रनी को भी इल्हाम होता था, उसने ऐसी विनम्रता धारण की कि नुबुव्वत के सूर्य और इमामत के सामने आना भी असभ्यता विचार किया। हमारे स्वामी हज़रत मुहम्मद☆ मुस्तफ़ा (स.अ.व.) अधिकांश बार यमन की ओर मुख करके फ़रमाया करते थे اَجِدُ رِيْحَ الرَّحْمٰنِ مِنْ قِبَلِ الْيَمَن अर्थात् मुझे यमन की ओर से ख़ुदा की सुगन्ध आती है। यह इस बात की ओर संकेत था कि 'उवैस' में ख़ुदा का प्रकाश उतरा है, परन्तु खेद कि इस युग में अधिकांश लोग सच्ची इमामत की आवश्यकता को नहीं समझते और एक सच्चे स्वप्न आने से या कुछ इल्हामी वाक्यों से विचार कर लेते हैं कि हमें समय के इमाम की आवश्यकता नहीं क्या हम कुछ कम हैं और यह भी नहीं सोचते कि ऐसा ⓟविचार सरासर पाप है क्योंकि ⓟ4 जब कि हमारे नबी (स.अ.व.) ने युग के इमाम की आवश्यकता प्रत्येक शताब्दी के लिए स्थापित की है और स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया है कि जो व्यक्ति इस अवस्था में ख़ुदा तआला की ओर आएगा कि उसने अपने युग के इमाम को न पहचाना वह अंधा आएगा और अज्ञानता की मृत्यु मरेगा। इस हदीस में आंहज़रत (स.अ.व.) ने किसी मुल्हम या स्वप्न दृष्टा को पृथक नहीं किया जिस से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि कोई मुल्हम हो अथवा स्वप्न दृष्टा हो यदि वह समय के इमाम के सिलसिले में सम्मिलित नहीं होता तो उस का अन्त ख़तरनाक है क्योंकि स्पष्ट है कि इस हदीस

☆-प्रथम संस्करण में मुहम्मद का शब्द लिपिक से भूल से रह गया है (प्रकाशक)

के सम्बोधित समस्त मोमिन और मुसलमान हैं और उनमें प्रत्येक युग में सहस्त्रों स्वप्न-दृष्टा और मुल्हम भी होते आए हैं अपितु सत्य तो यह है कि उम्मते-मुहम्मदिया में कई करोड़ ऐसे लोग होंगे जिन्हें इल्हाम होता होगा। फिर इसके अतिरिक्त हदीस और क़ुर्आन से यह सिद्ध है कि युग के इमाम के समय में यदि किसी को कोई सच्चा स्वप्न या इल्हाम होता है तो वह वास्तव में युग के इमाम का ही प्रतिबिम्ब होता है जो तत्पर हृदयों पर पड़ता है। वास्तविकता यह है कि संसार में जब कोई युग का इमाम आता है तो उसके साथ हज़ारों प्रकाश आते हैं और आकाश में एक आनंदमय अवस्था उत्पन्न हो जाती है तथा आध्यात्मिकता और प्रकाश का प्रसार होकर नेक योग्यताएं जागृत हो जाती हैं। अतः जो व्यक्ति इल्हाम की योग्यता रखता है, उसे इल्हाम का सिलसिला आरम्भ हो जाता है और जो व्यक्ति सोच-विचार के द्वारा धार्मिक बोध की योग्यता रखता है उसकी सोच-विचार की शक्ति को बढ़ाया जाता है और जिसकी प्रेरणा उपासनाओं की ओर हो उसे इबादत और उपासना में आनन्द प्रदान किया जाता है और जो व्यक्ति अन्य क़ौमों के साथ शास्त्रार्थ करता है उसे बात को तार्किक रूप में प्रस्तुत करने और समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान की जाती है। ये समस्त बातें वास्तव में उसी आध्यात्मिकता के प्रसार का परिणाम होता है जो युग के इमाम के साथ आकाश से उतरतीं और प्रत्येक जिज्ञासु के हृदय को प्रभावित करती हैं और यह एक सामान्य और ख़ुदाई नियम है जो हमें क़ुर्आन करीम और सही हदीसों के मार्ग-दर्शन से ज्ञात हुआ तथा व्यक्तिगत अनुभवों ने इसका अवलोकन कराया है, परन्तु मसीह मौऊद के युग की इस से भी बढ़ कर एक विशेषता है और वह यह है कि पूर्वकालीन नबियों की किताबों और नबी करीम (स.अ.व.) की हदीसों में उल्लेख है कि मसीह मौउद के अवतरित होने के समय प्रकाश का वह प्रसार इस सीमा तक होगा कि स्त्रियों को भी इल्हाम

आरम्भ हो जाएगा और Ⓟअवयस्क बच्चे नुबुव्वत करेंगे और सामान्य लोग Ⓟ5 रुहुलक़ुदस से बोलेंगे और यह सब कुछ मसीह मौऊद की आध्यात्मिकता का प्रतिबिम्ब होगा जैसा कि दीवार पर सूर्य की छाया पड़ती है तो दीवार प्रकाशित हो जाती है और यदि चूना और क़लई से सफेद की गई हो तो फिर तो और भी अधिक चमकती है, यदि उसमें दर्पण लगाए गए हों तो उन का प्रकाश इतना बढ़ जाता है कि आँख में देखने की शक्ति नहीं रहती, परन्तु दीवार दावा नहीं कर सकती कि यह सब कुछ व्यक्तिगत तौर पर मुझ में है, क्योंकि सूर्यास्त के पश्चात फिर उस प्रकार का नामो-निशान नहीं रहता। अत: इसी प्रकार समस्त इल्हामी प्रकाश युग के इमाम के प्रकाशों का प्रतिबिम्ब होता है और यदि कोई प्रारब्ध का फेर न हो और ख़ुदा की ओर से कोई परीक्षा न हो तो भाग्यशाली मनुष्य इस रहस्य को शीघ्र समझ सकता है और ख़ुदा न करे यदि कोई इस ख़ुदाई रहस्य को न समझे और युग के इमाम की सूचना पा कर उस से संबंध स्थापित न करे तो फिर प्रथम ऐसा व्यक्ति इमाम से निस्पृहता प्रकट करता है और फिर निस्पृहता से अजनबियत पैदा होती है और फिर अजनबियत से कुधारणा का बढ़ना आरम्भ हो जाता है और कुधारणा से शत्रुता जन्म लेती है और शत्रुता से 'नऊज़ुबिल्लाह' ईमान के समाप्त होने तक की बारी आ जाती है जैसा कि आंहज़रत (स.अ.व.) के अवतरित होने के समय सहस्त्रों सन्यासी, मुल्हम और कश्फ़ वाले लोग थे और अन्तिम युग के नबी के प्रकटन की निकटता की ख़ुशख़बरी सुनाया करते थे, परन्तु जब उन्होंने युग के इमाम को जो ख़ातमुलअंबिया थे स्वीकार न किया तो ख़ुदा के क्रोध की आकाश से गिरने वाली बिजली के अज़ाब ने उन्हें नष्ट कर दिया और उनके ख़ुदा तआला से सम्बंध बिल्कुल टूट गए तथा उनके बारे में जो कुछ क़ुर्आन करीम में लिखा गया उस के वर्णन की आवश्यकता नहीं। ये वही हैं जिनके पक्ष में क़ुर्आन करीम में वर्णन किया गया وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ① इस

①-अलबक़रह-90

आयत के अर्थ यही है कि ये लोग ख़ुदा तआला से धर्म की सहायता के लिए दुआ मांगा करते थे और उन्हें इल्हाम और कश्फ़ होता था, यद्यपि वे यहूदी जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अवज्ञा की थी ख़ुदा की दृष्टि से गिर गए थे परन्तु जब ईसाई धर्म सृष्टि-पूजा के कारण मर गया और उस में सच्चाई और प्रकाश न रहा तो तत्कालीन यहूदी इस पाप से मुक्त हो गए कि वे ईसाई क्यों नहीं होते, तब उनमें दोबारा आध्यात्मिकता ने जन्म लिया और उनमें से अधिकांश मुल्हम और कश्फ़ वाले लोग पैदा होने लगे तथा उनके ईसाई सन्यासियों में उत्तम परिस्थितियों के लोग थे और वे Ⓟहमेशा इस बात का इल्हाम पाते थे कि अन्तिम युग का नबी एवं इमाम शीघ्र पैदा होगा। इसी कारण कुछ ख़ुदाई धर्माचार्य ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर अरब देश में आ रहे थे और उनके बच्चे-बच्चे को सूचना थी कि आकाश से शीघ्र एक नया सिलसिला स्थापित किया जाएगा। यही अर्थ इस आयत के हैं कि يَعۡرِفُوۡنَہٗ کَمَا یَعۡرِفُوۡنَ اَبۡنَآءَہُمۡ ① अर्थात् इस नबी को वह इतनी स्पष्टता से पहचानते हैं जितना कि अपने बच्चों को, परन्तु जब वह कथित नबी उस पर ख़ुदा का सलाम प्रकट हो गया तब अहंकार और द्वेष ने अधिकांश ईसाई सन्यासियों को नष्ट कर दिया और उन के हृदय कठोर हो गए, परन्तु कुछ भाग्यशाली मुसलमान हो गए और उनका इस्लाम अच्छा हुआ। अतः यह भय का स्थान है और अत्यधिक भय का स्थान है। ख़ुदा तआला किसी मोमिन का बलअम की भांति अशुभ अन्त न करे। हे मेरे ख़ुदा तू इस उम्मत को उपद्रवों से सुरक्षित रख और यहूदियों के उदाहरण उन से दूर रख। आमीन पुनः आमीन। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने क़बीले और क़ौमें इस कारण बनाईं ताकि इस भौतिक सभ्यता की एक व्यवस्था स्थापित हो और कुछ के कुछ लोगों से रिश्ते और सम्बन्ध हो कर परस्पर हमदर्द और सहयोगी हो जाएँ। इसी उद्देश्य से उसने नुबुव्वत और इमामत का

Ⓟ6

①-अलबक़रह-147

सिलसिला स्थापित किया है ताकि उम्मते मुहम्मदिया में आध्यात्मिक संबंध स्थापित हो जाएँ और परस्पर सिफ़ारिश करने वाले हों।

अब एक आवश्यक प्रश्न यह है कि युग का इमाम किसे कहते हैं और उसके लक्षण क्या हैं तथा उसे अन्य इल्हाम वालों और स्वप्न दृष्टाओं तथा कश्फ़ वालों पर प्रमुखता क्या है। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि युग का इमाम उस व्यक्ति का नाम है कि जिसके आध्यात्मिक प्रशिक्षण बन कर उस के स्वभाव में इमामत का एक ऐसा प्रकाश रख देता है कि वह समस्त संसार के तर्कशास्त्रियों और दार्शनिकों से प्रत्येक रूप में शास्त्रार्थ करके उन्हें पराजित कर लेता है, वह हर प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म आरोपों का ख़ुदा से शक्ति पाकर ऐसी उत्तमता से उत्तर देता है कि अन्ततः स्वीकार करना पड़ता है कि उसका स्वभाव संसार के सुधार का पूरा सामान लेकर इस यात्री-निवास में आया है, इसलिए उसे किसी प्रतिद्वन्द्वी के समक्ष लज्जित नहीं होना पड़ता। वह आध्यात्मिक तौर पर मुहम्मदी सेनाओं का सेनापति होता है और ख़ुदा तआला का इरादा है कि उसके द्वारा धर्म को पुनः विजयी करे और वे समस्त लोग जो उसके झण्डे के नीचे आते हैं उन्हें भी उच्च श्रेणी की Ⓟशक्तियां दी जाती हैं और सुधार Ⓟ7 के लिए वे समस्त शर्तें और वे समस्त ज्ञान जो आरोपों के निवारण और इस्लामी गुणों के वर्णन हेतु आवश्यक हैं उसे प्रदान किए जाते हैं इसके बावजूद चूंकि अल्लाह तआला जानता है कि उसे संसार के अनादरों, और अपयशों का भी मुक़ाबला करना पड़ेगा, इसलिए उसे उच्च श्रेणी की नैतिक शक्ति भी प्रदान की जाती है तथा उसके हृदय में प्रजा की सच्ची सहानुभूति होती है। नैतिक शक्ति से यह अभिप्राय नहीं कि वह प्रत्येक स्थान पर अकारण नर्मी करता है क्योंकि यह तो नैतिक नीति के नियम के विपरीत है अपितु अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार अनुदार व्यक्ति प्रतिद्वन्दी और असभ्य की बातों से नितान्त क्रोधित होकर स्वभाव में शीघ्र

परिवर्तन पैदा कर लेते हैं और उनके चेहरे पर उस दर्दनाम अज़ाब जिस का नाम प्रकोप है जिसके लक्षण नितान्त घृणित रूप में प्रकट हो जाते हैं तथा उन्माद और अद्विग्नता की बातें सहसा तथा अनुचित मुख से निकलने लग जाती हैं, यह अवस्था नैतिकतापूर्ण लोगों में नहीं होती, हां समय और अवसर के अनुसार कभी उपचार के तौर पर कठोर शब्द भी प्रयोग कर लेते हैं, परन्तु उस प्रयोग के समय न उन का हृदय उन्मादग्रस्त होता है और न उद्विग्नता की अवस्था उत्पन्न होती है, न मुख पर झाग आता है, हाँ कभी कृत्रिम क्रोध की धाक दिखाने के लिए प्रकट कर देते हैं और हृदय आराम और हर्षोल्लास में होता है। यही कारण है कि यद्यपि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने सम्बोधित लोगों के पक्ष में अधिकतर कठोर शब्द प्रयोग किए हैं जैसा कि सुअर, कुत्ते, बेईमान, दुराचारी इत्यादि-इत्यादि, परन्तु हम नहीं कह सकते कि नऊज़ुबिल्लाह आप उत्तम सदाचार से अनभिज्ञ थे क्योंकि वह तो स्वयं सदाचार की शिक्षा देते और नर्मी पर बल देते थे अपितु यह शब्द जो अधिकतर आप के मुँह पर जारी रहते थे ये क्रोध के आवेग और उन्मादपूर्ण आक्रोश से नहीं निकलते थे अपितु ये शब्द नितान्त आराम और शीतल हृदय से यथास्थान चरितार्थ किए जाते थे। अतः नैतिक अवस्था में विशेषता रखना इमामों के लिए आवश्यक है और यदि कोई कठोर शब्द दग्धहृदय और उन्मादपूर्ण आक्रोश से न हो और यथास्थान चरितार्थ और यथोचित हो तो वह नैतिकता के विपरीत नहीं है। यह बात वर्णन योग्य है कि जिन्हें ख़ुदा तआला का हाथ इमाम बनाता है उनके स्वभाव में ही इमामत की शक्ति रखी जाती है और जिस प्रकार ख़ुदाई स्वभाव ने इस आयत के अनुसार .اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ[①]
Ⓟ8 [Ⓟ]प्रत्येक पशु-पक्षी में पहले से वह शक्ति रख दी है जिसके सन्दर्भ में ख़ुदा तआला के ज्ञान में यह था कि उस शक्ति द्वारा उस से काम लेना पड़ेगा इसी प्रकार उन लोगों में जिन के बारे में ख़ुदा तआला के अनादि ज्ञान

---
①-ताहा-51

में यह है कि उन से इमामत का काम लिया जाएगा। इमामत के पद की स्थिति के अनुसार कई आध्यात्मिक प्रकृतियाँ पहले से रखी जाती हैं और जिन योग्यताओं की भविष्य में आवश्यकता होगी उन समस्त योग्यताओं की बीज उनके पवित्र स्वभाव में बोया जाता है तथा मैं देखता हूँ कि इमामों में प्रजा को लाभ और वरदान पहुँचाने के लिए निम्नलिखित शक्तियों का होना आवश्यक है:-

प्रथम - नैतिक शक्ति - चूंकि इमामों को भांति-भांति के आवारा, अधम और अपशब्दों का प्रयाग करने वाले लोगों से पाला पड़ता है, इसलिए उनमें उच्च स्तर की नैतिकता का होना आवश्यक है ताकि उनमें हार्दिक आवेग और अन्मादपूर्ण आक्रोश पैदा न हो और लोग उनकी दानशीलता से वंचित न रहें। यह नितान्त लज्जाजनक बात है कि एक व्यक्ति ख़ुदा का मित्र कहला कर फिर अधमतापूर्ण सदाचारों में लिप्त हो और कठोर शब्दों को तनिक भी सलहन न कर सके तथा जो युग का इमाम कहला कर ऐसे अपरिपक्व स्वभाव का व्यक्ति हो कि छोटी-छोटी बात में मुँह में झाग आता हो, आँखें नीली-पीली होती हैं, वह किसी प्रकार युग का इमाम नहीं हो सकता। अतः इस पर आयत وَإِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيمٍ[1] का पूर्णतया चरितार्थ होना आवश्यक है।

द्वितीय - इमामत की शक्ति - जिसके कारण उस का नाम इमाम रखा गया है अर्थात नेक बातों और शुभ कर्मों, समस्त ख़ुदाई ज्ञानों और ख़ुदा के प्रेम में अग्रसर होने की रुचि अर्थात उसकी आत्मा किसी क्षति को पसन्द न करे और किसी आत्मा किसी क्षति को पसन्द न करे और किसी अपूर्ण अवस्था पर सहमत न हो तथा इस बात से उसे कष्ट पहुँचे और दुःखी हो कि वह उन्नति से रोका जाए। यह एक स्वाभाविक शक्ति है जो इमाम में होती है और यदि यह संयोग भी सामने न आए कि लोग उसके ज्ञानों और आध्यात्म ज्ञानों का अनुसरण करें और उस

---
①-अल्क़लम-5

के प्रकाश के अधीन चलें तब भी वह अपनी स्वाभाविक शक्ति की दृष्टि से इमाम है। अत: मारिफ़त का यह रहस्य स्मरण रखने के योग्य है कि इमामत एक शक्ति है जो उस व्यक्ति के स्वभाव के जौहर में रखी जाती है कि जो उस कार्य के लिए ख़ुदा के इरादे में होता है और यदि इमामत के शब्द का अनुवाद करें तो यों कह सकते हैं कि अग्रसर होने की शक्ति। Ⓟ९ अत: यह कोई अस्थायी Ⓟपद नहीं जो पीछे से लग जाता है अपितु जिस प्रकार देखने की शक्ति, सुनने की शक्ति और समझने की शक्ति होती है उसी प्रकार यह आगे बढ़ने और ख़ुदाई बातों में सर्वप्रथम श्रेणी पर रहने की शक्ति है और इन्हीं अर्थों की ओर इमामत का शब्द संकेत करता है।

तृतीय - ज्ञान में विशालता की शक्ति - जो इमामत के लिए आवश्यक है और उसकी विशेषता अनिवार्य है। चूंकि इमामत का भाव समस्त सच्चाइयों, आध्यात्म ज्ञानों, प्रेम श्रद्धा और वफ़ा के साधनों में आगे बढ़ने को चाहता है इसीलिए वह अपनी समस्त अन्य शक्तियों को इसी सेवा में लगा देता है और رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا[1] की दुआ में प्रतिपल व्यस्त रहता है और उनकी ज्ञानेन्द्रियां इन बातों के लिए योग्य जौहर होती हैं, इसीलिए ख़ुदा तआला की कृपा से तर्कशास्त्रीय ज्ञानों में उसे विशालता प्रदान की जाती है तथा उसके युग में कोई अन्य ऐसा नहीं होता जो क़ुर्आनी ज्ञानों के जानने, लाभ पहुँचाने की विशेषताओं और समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने में उसके समान हो, उसकी सही राय अन्य के ज्ञानों का सुधार करती है और यदि धार्मिक सच्चाईयों के वर्णन करने में किसी की राय उसकी राय के विपरीत हो तो सत्य उसकी ओर होता है क्योंकि सच्चे ज्ञानों के जानने में विवेक का प्रकाश उसकी सहायता करता है और वह प्रकाश उन चमकती हुई रश्मियों के साथ दूसरों को नहीं दिया जाता है। यह ख़ुदा की कृपा है जिसे चाहता है देता है। अत: जिस प्रकार मुर्ग़ी अंडों को अपने परों के नीचे ले कर उन को बच्चे बनाती है और फिर

---

①-ताहा-115

बच्चों को परों के नीचे रखकर अपने जौहर उनके अन्दर पहुँचा देती है, इसी प्रकार यह व्यक्ति अपने आध्यात्मिक ज्ञानों से संगत में रहने वालों को ज्ञान के रंग से रंगीन करता रहता है तथा विश्वास और ख़ुदा की पहचान के ज्ञान में बढ़ाता जाता है परन्तु अन्य इल्हाम वालों और संयमियों के लिए इस प्रकार की ज्ञानपूर्ण विशालता आवश्यक नहीं, क्योंकि लोगों का ज्ञान संबंधी प्रशिक्षण उनके सुपुर्द नहीं किया जाता तथा ऐसे संयमियों और स्वप्न दृष्टाओं में यदि कुछ ज्ञान की कमी और अज्ञानता शेष है तो कुछ ऐतिराज़ का स्थान नहीं, क्योंकि वे किसी नौक़ा के खेवनहार नहीं हैं अपितु स्वयं खेवनहार (मल्लाह) के मुहताज हैं। हाँ उन्हें इन निरर्थक बातों में नहीं पड़ना चाहिए कि हमें इस आध्यात्मिक मल्लाह की कुछ आवश्यकता नहीं। हम स्वयं ऐसे और ऐसे हैं। उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि उन्हें अनिवार्य तौर पर आवश्यकता है जिस प्रकार कि स्त्री को पुरुष की आवश्यकता है। ख़ुदा ने प्रत्येक को एक कार्य के लिए पैदा किया है। Ⓟअत: जो व्यक्ति इमामत के लिए पैदा नहीं किया गया यदि वह ऐसा दावा Ⓟ10 मुख पर लाएगा तो वह लोगों से उसी प्रकार अपना उपहास कराएगा जिस प्रकार कि एक मूर्ख वली ने बादशाह के समक्ष उपहास कराया था। वृत्तान्त यों है कि किसी शहर में एक संयमी था जो भाग्यशाली और संयमी तो था, परन्तु ज्ञान से अनभिज्ञ था और बादशाह को उस पर श्रद्धा थी और मंत्री उसकी अज्ञानता के कारण उसका श्रद्धालु नहीं था। एक बार मंत्री और बादशाह दोनों उस से मिलने के लिए गए और उसने मात्र व्यर्थ के मार्ग से इस्लामी इतिहास में हस्तक्षेप करते हुए बादशाह से कहा कि इस्कन्दर रूमी भी इस उम्मत में बड़ा बादशाह गुज़रा है तब मंत्री को आलोचना करने का अवसर प्राप्त हुआ और तुरन्त कहने लगा कि देखिए जनाब फ़क़ीर साहिब को वली होने की विशेषताओं के अतिरिक्त इतिहास के ज्ञान में भी बहुत कुछ अधिकार है। अत: युग के इमाम को विरोधियों और

सामान्य प्रश्नकर्ताओं के सामने इतनी इल्हाम की आवश्यकता नहीं जितनी ज्ञान संबंधी शक्ति की आवश्यकता है, क्योंकि शरीअत पर हर प्रकार के ऐतिराज़ करने वाले होते हैं। चिकित्सा की दृष्टि से भी, खगोल विद्या की दृष्टि से भी, भौतिक विज्ञान, भूगोल विद्या की दृष्टि से भी, इस्लामी मान्य पुस्तकों की दृष्टि से भी, बौद्धिक आधार पर भी तथा पुस्तकों से ली गई इबारतों के आधार पर भी युग का इमाम सम्पूर्ण इस्लाम का सहायक कहलाता है और ख़ुदा तआला की ओर से उस उद्यान का माली ठहराया जाता है और उस का कर्त्तव्य होता है कि प्रत्येक आरोप का निवारण करे और प्रत्येक आरोपक को निरूत्तर कर दे और केवल यह नहीं अपितु उस का यह भी कर्त्तव्य होता है कि न केवल आरोपियों का निवारण करे अपितु इस्लाम की विशेषता और सुन्दरता भी संसार पर प्रकट कर दे। अत: ऐसा व्यक्ति नितान्त सम्माननीय और दुर्लभ का आदेश रखता है क्योंकि उसके अस्तित्व से इस्लाम की जीवन प्रकट होता है और वह इस्लाम को गौरव और समस्त लोगों पर ख़ुदा का प्रमाण होता है और किसी के लिए वैध नहीं होता कि उससे पृथक हो जाए क्योंकि वह ख़ुदा तआला के इरादे और आज्ञा से इस्लाम की मर्यादा का अभिभावक तथा समस्त मुसलमानों का हमदर्द और धार्मिक विशेषताओं पर एक वृत्त की भांति व्याप्त होता है। इस्लाम और कुफ्र की प्रत्येक अखाड़े में वही काम आता है और उसी की पुनीत साँसें कुफ्र की विनाशकारी होती हैं। वह बतौर कुल के होता है और शेष सब उसके भाग होते हैं -

او چو کل و تو جزئی نے کلی
تو ہلاک استی اگر از وے بگسلی*

---

* वह (युग का इमाम) कुल की भांति है और तू अंश के समान है, कुल नहीं। यदि तू उस से सम्बन्ध-विच्छेद करले तो जानले कि तबाह हो गया। अनुवादक

Ⓟ**चुतर्थ - प्रण की शक्ति -** जो युग के इमाम के लिए आवश्यक Ⓟ11 है और अज़्म (प्रण) से अभिप्राय यह है कि किसी अवस्था में न थकना और न निराश होना और न इरादे में सुस्त हो जाना। प्राय: नबियों, रसूलों और मुहद्दिसों को जो युग के इमाम होते हैं ऐसी परीक्षाएं सामने आ जाती हैं कि वे प्रत्यक्षतया ऐसे संकटों में फंस जाते हैं कि जैसे ख़ुदा तआला ने उन्हें त्याग दिया है और उनके विनाश का इरादा कर लिया है और प्राय: उनकी वह्यी और इल्हाम में अवकाश आ जाते है कि एक अवधि तक कुछ वह्यी नहीं होती और प्राय: उनकी कुछ भविष्यवाणियां परीक्षा के रूप में प्रकट होती हैं और जन सामान्य पर उन का सत्य प्रकट नहीं होता और प्राय: उनके उद्देश्य की प्राप्ति में बहुत कुछ विलम्ब आ जाता है और प्राय: वे संसार में बहिष्कृत, तिरस्कृत, धिक्कृत और अमान्य की भांति होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति जो उन्हें गली देता है तो विचार करता है कि जैसे मैं बड़ा पुण्य-कर्म कर रहा हूँ और प्रत्येक उनसे घृणा करता और अप्रिय दृष्टि से देखता है तथा नहीं चाहता कि सलाम का भी उत्तर दे, परन्तु ऐसे समयों में उनके प्रण की परीक्षा होती है, वे उन परीक्षाओं से कदापि निराश नहीं होते और न अपने कार्य में सुस्त होते हैं, यहां तक कि ख़ुदा की सहायता का समय आ जाता है।

पंचम 'इक़्बाल अलल्लाह की शक्ति' (अल्लाह की ओर पूर्णतया आकृष्ट होने की शक्ति) इमाम के लिए आवश्यक है और इक़्बाल अल्लाह से अभिप्राय यह है कि वे लोग संकटों और परीक्षाओं के समय तथा उस समय जब शत्रु से सख़्त मुकाबला आ पड़े और किसी निशान की मांग हो और या किसी विजय की आवश्यकता हो अथवा किसी की हमदर्दी अनिवार्य हो ख़ुदा तआला की ओर झुकते हैं और फिर ऐसे झुकते हैं कि उनकी श्रद्धाएं, निष्कपटताएं, प्रेम, और वफ़ा तथा अटूट

प्रण से परिपूर्ण दुआओं से फ़रिश्तों में एक शोर पड़ जाता है तथा उनकी तन्मयतापूर्ण गिड़गिड़ाहटों से आकाशों में एक भयंकर कोलाहल पैदा हो कर फ़रिश्तों में व्याकुल डालती है फिर जिस प्रकार भीषम गर्मी की चरम सीमा के पश्चात वर्षा के प्रारम्भ में आकाश पर बादल प्रकट होने आरम्भ हो जाते हैं इसी प्रकार उनके 'इक़बाल अल्लाह' की गर्मी अर्थात् ख़ुदा तआला की ओर नितान्त ध्यान की गर्मी आकाश पर कुछ बनाना आरम्भ Ⓟ12 कर देती है और प्रारब्ध बदलते हैं और Ⓟख़ुदाई इरादे और रंग धारण करते हैं यहां तक कि प्रारब्ध की शीतल समीरें चलना आरम्भ हो जाती हैं और जिस प्रकार ज्वर का तत्व ख़ुदा तआला की ओर से पैदा होता है और फिर जुलाब की दवा भी ख़ुदा तआला ने आदेश से ही उस तत्व को बाहर निकालती है। इसी प्रकार ख़ुदा के वलियों के 'इक़बाल अल्लाह' का प्रभाव होता है।

آں دعائے شیخ نے چوں ہر دعاست
فانی است و دستِ او دستِ خداست*

और युग के इमाम का 'इक़बाल अल्लाह' अर्थात उसका ख़ुदा की ओर ध्यान समस्त ख़ुदा के वलियों की तुलना में अत्यधिक तीव्र और शीघ्र प्रभावकारी होता है जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम अपने युग का इमाम था और 'बलअम' अपने समय का वली था जिसे ख़ुदा तआला से वार्तालाप और सम्बोधन का सौभाग्य प्राप्त था तथा उसकी दुआएं स्वीकार होती थीं परन्तु जब मूसा से 'बलअम' का मुकाबला आ पड़ा तो वह मुक़ाबला बलअम को इस प्रकार नष्ट कर गया कि जिस प्रकार एक तेज़ तलवार एक पल में सर को शरीर से पृथक कर देती है और दुर्भाग्यशाली 'बलअम' को इस फ़्लास्फ़ी की ख़बर न थी कि यद्यपि ख़ुदा तआला

---

* उस बुज़ुर्ग की दुआ अन्य की दुआ की भांति नहीं होती वह ख़ुदा में विलीन है तथा उसका हाथ ख़ुदा का हाथ है। अनुवादक

किसी से वार्तालाप करे और उसे अपना प्रिय और चुना हुआ ठहराए परन्तु वह जो कृपा के पानी में उस से बढ़ कर है जब उस से उसका मुकाबला होगा तो नि:सन्देह इस का विनाश हो जाएगा और उस समय कोई इल्हाम काम न देगा और न दुआओं का स्वीकार होने वाला होना कुछ सहायता देगा और यह तो एक 'बलअम' था परन्तु मैं जानता हूँ कि हमारे नबी (स.अ.व.) के समय में इस प्रकार सहस्त्रों बलअम तबाह हुए जिस प्रकार कि यहूदियों के सन्यासी ईसाई धर्म के मरने के पश्चात् प्राय: ऐसे ही थे।

षष्टम - कश्फ़ों और इल्हामों का सिलसिला- जो युग के इमाम के लिए आवश्यक होता है। युग का इमाम अधिकतर इल्हामों के माध्यम से ख़ुदा तआला से ज्ञानों, सच्चाइयों और आध्यात्मिक ज्ञानों को पाता है और उसके इल्हामों को अन्य के इल्हामों से अनुमान नहीं लगा सकते क्योंकि वे मात्रा और गुणवत्ता में उस उच्च स्तर के होते हैं जिस से बढ़कर मनुष्य के लिए संभव नहीं और उनके द्वारा ज्ञान प्रकट होते हैं और क़ुर्आनी आध्यात्म ज्ञान होते हैं तथा धार्मिक जटिलताएं और पेचीदा बातों के समाधान होते हैं उच्च श्रेणी की भविष्यवाणी जो विरोधी क़ौमों को प्रभावित कर सकें प्रकट होती हैं। अत: जो लोग युग के इमाम हों उनके कश्फ़ और इल्हाम केवल व्यक्तिगत बातों तक सीमित नहीं होते अपितु धर्म की सहायता तथा ईमान की दृढ़ता के लिए नितान्त ℗लाभप्रद और ℗13 मुबारक होते हैं और ख़ुदा तआला उनसे नितान्त स्पष्टता पूर्वक वार्तालाप करता है और उनकी दुआओं का उत्तर देता है और कभी-कभी प्रश्नोत्तर का एक सिलसिला आयोजित होकर एक ही समय के प्रश्न के बाद उत्तर और फिर प्रश्न के बात उत्तर और फिर प्रश्न के बाद उत्तर ऐसे शुद्ध आनंददायक और इल्हाम की सुगम शैली में आरम्भ होता है कि इल्हाम वाला (मुल्हम) विचार करता है कि जैसे वह ख़ुदा तआला को देख रहा है और युग के इमाम का ऐसा इल्हाम नहीं होता कि जैसे एक गोफन से ढेला

फेंक जाए और भाग जाए और मालूम न हो कि वह कौन था और कहां गया अपितु ख़ुदा तआला उनसे बहुत निकट हो जाता है तथा अपने पवित्र और आभामय चेहरे से जो प्रकाश मात्र है एक सीमा तक पर्दा उतार देता है और अवस्था दूसरों को प्राप्त नहीं होती अपितु वे तो प्राय: स्वयं को ऐसा पाते हैं कि जैसे उन से कोई उपहास कर रहा है युग के इमाम की इल्हामी भविष्यवाणियां परोक्ष के प्रकटन की श्रेणी रखती है अर्थात परोक्ष (ग़ैब) को हर पहलू से एक अधिकार में ले लेते हैं जैसे कि घोड़े का निपुण सवार घोड़े को क़ब्ज़े में करता है और यह शक्ति और प्रकटन उनके इल्हाम को इसलिए दिया जाता है कि ताकि उनके पवित्र इल्हाम शैतानी इल्हामों से संदिग्ध न हों और ताकि दूसरों पर प्रमाण हो सकें।

स्पष्ट हो कि शैतानी इल्हाम होना सत्य है और कुछ अपूर्ण साधक लोगों को हुआ करते हैं और हदीसुन्नफ़्स भी होती है जिसे अस्त-व्यस्त स्वप्न भी कहते हैं और जो व्यक्ति इस से इन्कार करे वह क़ुर्आन करीम का विरोध करता है क्योंकि क़ुर्आन करीम के बयान से शैतानी इल्हाम सिद्ध है और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब तक मनुष्य की आत्मशुद्धि पूर्णरूपेण न हो तब तक उसे शैतानी इल्हाम हो सकता है और वह आयत عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ① के अन्तर्गत आ सकता है, परन्तु पवित्र लोगों को शैतानी बहकावे पर अविलम्ब सूचित किया जाता है। खेद कि कुछ पादरी लोगों ने अपनी पुस्तकों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के संबंध में उस घटना की व्याख्या में कि जब शैतान उन्हें एक पहाड़ी पर ले गया इतना साहस किया है कि वे लिखते हैं कि यह कोई बाह्य बात न थी जिसे संसार देखता और जिसे यहूदी भी देखते अपितु यह तीन बार शैतानी इल्हाम हज़रत मसीह को ℗हुआ था जिसे उन्होंने स्वीकार न किया परन्तु इन्जील की ऐसी व्याख्या सुनने से हमारा तो शरीर कांपता है कि मसीह और फिर शैतानी इल्हाम। हाँ यदि इस शैतानी वार्तालाप को शैतानी इल्हाम न मानें

℗14

①-अश्शुअरा-223

और यह विचार करें कि वास्तव में शैतान ने साकार हो कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से भेंट की थी तो यह एतिराज़ पैदा होता है कि यदि शैतान ने जो पुराना सांप है वास्तव में स्वयं को भौतिक रूप में प्रकट किया था और बाह्य अस्तित्व के साथ आदमी बन कर यहूदियों के ऐसे बरकत वाले उपासना-गृह के निकट आकर खड़ा हो गया था जिसके इर्द-गिर्द सैकड़ों लोग रहते थे तो आवश्यक था कि उसे देखने के लिए हज़ारों लोग एकत्र हो जाते अपितु चाहिए था कि हज़रत मसीह आवाज़ देकर यहूदियों को शैतान दिखा देते जिसके अस्तित्व के कई सम्प्रदाय इन्कारी थे और शैतान को दिखा देना हज़रत मसीह का एक निशान ठहरता जिससे बहुत से लोग पथ-प्रदर्शन पाते तथा रोम के शासन के सम्माननीय अधिकारी शैतान को देख कर और फिर उसे उड़ते हुए देख कर हज़रत मसीह के अवश्य अनुयायी हो जाते, परन्तु ऐसा न हुआ। इससे विश्वास होता है कि यह कोई आध्यात्मिक वार्तालाप था जिसे दूसरे शब्दों में शौतानी इल्हाम कह सकते हैं, परन्तु मेरे विचार में यह भी आता है कि यहूदियों की किताबों में बहुत से दुष्ट लोगों का नाम भी शैतान रखा गया है। अतः इसी मुहावरे के अनुसार मसीह ने भी अपने एक बुज़ुर्ग हवारी को जिसे इन्जील में इस घटना के लिखने से कुछ ही पंक्तियां पूर्व स्वर्ग की कुंजियां दी गई थीं शैतान कहा है। अतः यह बात भी परिस्थिति जन्य है कि कोई यहूदी शैतान हंसी-ठट्ठे के तौर पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के पास आया होगा और आपने जैसा कि पतरस का नाम शैतान रखा उसे भी शैतान कह दिया होगा और यहूदियों में इस प्रकार की उद्दण्ताएं भी थीं, ऐसे प्रश्न करना यहूदियों की विशेषता है और यह भी संभावना है कि यह सब कहानी ही झूठ हो जो जान बूझ कर या धोखा खाने से लिख दी हो, क्योंकि ये इन्जीलें हज़रत मसीह की इंजीलें नहीं हैं, और न उनकी सत्यापित हैं अपितु हवारियों ने या किसी और ने अपने विचार और बुद्धि के अनुसार लिखा है इसी

कारण से उनमें परस्पर मतभेद भी है। अतः कह सकते हैं कि इन विचारों में लिखने वालों से भूल हो गई ⓟजिस प्रकार यह ग़लती हुई कि इन्जील लिखने वालों में से कुछ ने सोचा कि जैसा हज़रत मसीह सलीब पर मृत्यु पा गए हैं* हवारियों की ऐसी ग़लतियां स्वाभाविक थीं क्योंकि इन्जील हमें ख़बर देती है कि उनकी बुद्धि तीव्र न थी, उन की अपूर्णता की स्वयं हज़रत मसीह गवाही देते हैं कि वे बोध, प्रतिभा और क्रियात्मक शक्ति में भी कमज़ोर थे। बहरहाल यह सत्य है कि पवित्र लोगों के हृदय में शैतानी विचार दृढ़ नहीं हो सकता और यदि कोई तैरता हुआ सरसरी भ्रम उनके हृदय के निकट आ भी जाए तो वह शैतानी विचार अति शीघ्र दूर किया जाता है और उनकी पवित्रता पर कोई धब्बा नहीं लगता। क़ुर्आन करीम में इस प्रकार के पैशाचिक विचार जो एक हल्के और अपरिपक्व विचार के समान होता है ताइफ़ का नाम दिया जाता है और अरबी शब्दकोश में इस का नाम 'ताइफ़', 'तौफ़', तय्यफ़ और 'तैफ़' भी है और इस पैशाचिक विचार का हृदय से बहुत ही कम सम्बन्ध होता है, मानो नहीं होता या यों कहो कि जैसा कि दूर से किसी वृक्ष की छाया बहुत ही हल्की सी पड़ती है इसी प्रकार यह पैशाचिक विचार होता है और सम्भव है कि अभिशप्त शैतान ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के हृदय में इसी प्रकार के हल्के पैशाचिक विचार को डालने का इरादा किया हो और उन्होंने नुबुव्वत की शक्ति से उस पैशाचिक विचार को दूर कर दिया हो। हमें यह विवशता पूर्वक कहना पड़ा है कि वृत्तान्त केवल इन्जीलों में ही नहीं है अपितु हमारी सही हदीसों में भी है। अतः लिखा है:-

* ईसाइयों की बहुत सी इन्जीलों में से एक इंजील अब तक उनके पास वह भी है जिसमें लिखा है कि हज़रत मसीह सलीब पर नहीं मरे। यह बयान सही है क्योंकि मरहम-ए-ईसा इसका सत्यापन करता है जिसकी चर्चा सैकड़ों वैद्यों ने की है। इसी से.

عن محمد بن عمران الصیرفی قال حدثنا الحسن بن علیل العنزی عـن العباس بن عبدالواحد. عن محمد بن عمرو. عن محمد بن مناذر. عن سـفیـان بـن عیینـة عـن عمرو بن دینار. عن طاؤس عن ابی ہریرة قال جاء الشیطٰـن الٰی عیسٰـی. قـال الـست تزعم انک صادق قال بلٰی قال فاوف علی ھذہ الشاھقة فالق نفسک منھا فقال ویلک الم یقل اللّٰہ یا ابن ادم لا تبـلـنـی بھـلاکک فانی افعل ما اشاء☆

अर्थात मुहम्मद बिन इमराम सैरफ़ी से रिवायत है और उन्होंने हसन बिन अलील अन्ज़ी से रिवायत की और हसन ने अब्बास से और अब्बास ने मुहम्मद बिन उमर से और मुहम्मद बिन उमर ने मुहम्मद बिन मनाज़िर से और मुहम्मद बिन मनाज़िर ने सुफ़ियान बिन ℗उऐना से और सुफ़ियान ℗16 ने उमर बिन दीनार से और उमर बिन दीवार ने ताऊस से और ताऊस ने अबूहुरैरा से - कहा शैतान ईसा के पास आया और कहा कि क्या तू नहीं सोचता कि तू सच्चा है। उसने कहा कि क्यों नहीं। शैतान ने कहा कि यदि यह सत्य है तो इस पर्वत पर चढ़ जा और फिर उस पर से स्वयं को नीचे गिरा दे। हज़रत ईसा ने कहा कि तुझ पर हाहाकार हो क्या तू नहीं जानता कि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि अपनी मौत के साथ मेरी परीक्षा न ले कि मैं जो चाहता हूँ करता हूँ। अब स्पष्ट है कि शैतान उस ढंग से आया होगा जिस प्रकार जिब्राईल नबियों के पास आता है क्योंकि जिब्राईल ऐसे तो नहीं आता जैसे कि मनुष्य किसी गाड़ी में बैठ कर या किसी किराए के घोड़े पर सवार हो कर और पगड़ी बांध कर तथा चादर ओढ़ कर आता है अपितु उसका आना दूसरे संसार के रूप में होता है। फिर शैतान जो अधम और नितान्त निर्लज्ज है मानव रूप में क्योंकर खुले-खुले तौर पर आ सकता है। इस छान-बीन से बहरहाल इस बात को स्वीकार करना

☆-अलअग़ानी, लिअबिलफ़रज अलइस्फ़ानी अख़बार इब्ने मनाज़िर व नसबिही, भाग-18 पृष्ठ-207, दार इहयाउत्तुरास अलअरबी बैरूत से प्रकाशित (प्रकाशक)

पड़ता है जिसे ड्रैपर ने वर्णन किया है, परन्तु यह कह सकते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सालम ने नुबुव्वत की शक्ति और सत्य के प्रकाश के साथ शैतानी इल्क़ा को कदापि-कदापि निकट नहीं आने दिया और उस को दूर करने में तुरन्त व्यस्त हो गए और जिस प्रकार प्रकाश के मुकाबले पर अंधकार नहीं ठहर सकता, इसी प्रकार उनके मुकाबले पर शैतान नहीं ठहर सका और भाग गया। यही اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَکَ عَلَیْھِمْ سُلْطٰنٌ[1] के सही अर्थ हैं क्यों कि शैतान का आधिपत्य वास्तव में उन पर है जो शैतानी पैशाचिक विचार और इल्हाम को स्वीकार कर लेते हैं परन्तु जो लोग दूर से प्रकाश के तीर से शैतान को घायल करते हैं और उसके मुख पर डांट-डपट का जूता मारते हैं और अपने मुख से वह कुछ बके जाए उस का अनुसरण नहीं करते, वह शैतानी अधिपत्य से पृथक हैं, परन्तु चूंकि उन्हें ख़ुदा तआला पृथ्वी और आकाशों के फ़रिश्तों का संसार दिखाना चाहता है और शैतान पार्थिव शासन में से है। इसलिए आवश्यक है कि वह सृष्टियों के अवलोकन की परिधि को पूरा करने के लिए इस विचित्र प्रकृति वाले अस्तित्व का चेहरा देख लें और कलाम सुन लें जिसका नाम शैतान है उस से उनकी पवित्रता और अस्मत को कोई धब्बा नहीं लगता। हज़रत मसीह से शैतान ने अपने पुराने उपाय पैशाचिक विचार की पद्धति पर उद्दण्डता से एक याचना की थी। अत: उनके पवित्र स्वभाव ने उसका तुरन्त Ⓟखण्डन किया और स्वीकार न किया। इससे उनकी प्रतिष्ठा में कुछ कमी नहीं। क्या बादशाहों के सामने बदमाश कभी बात नहीं करते, इसी प्रकार आध्यात्मिक तौर पर शैतान से यसू के हृदय में अपना कलाम डाला। यसू ने उस शैतानी इल्हाम को स्वीकार न किया अपितु खण्डन किया। अत: यह तो प्रशंसनीय बात हुई इस से कोई आलोचना करना मूर्खता और आध्यात्मिक दार्शनिकता से अनभिज्ञता है परन्तु जैसा कि यसू ने अपने प्रकाश रूपी कोड़े से शैतानी विचार को दूर किया और उसके

Ⓟ17

[1]-अलहिज्र-43

इल्हाम की गन्दगी तुरन्त प्रकट कर दी। प्रत्येक संयमी और सूफ़ी का यह कार्य नहीं। सय्यद अब्दुल क़ादिर जैलानी रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक बार मुझे भी शैतानी इल्हाम हुआ था। शैतान ने कहा कि हे अब्दुल क़ादिर तेरी इबादतें स्वीकार हुईं अब जो कुछ दूसरों पर अवैध है तुझ पर वैध और अब तुझ नमाज़ से भी अवकाश है जो चाहे कर। तब मैंने कहा कि हे शैतान दूर हो मेरे लिए वे बातें कैसे उचित हो सकती हैं जो नबी अलैहिस्सलाम पर वैध नहीं हुईं, तब शैतान अपनी सुनहरी तख़्त के साथ मेरी आँखों के सामने से लुप्त हो गया। अब जब कि सय्यद अब्दुल क़ादिर जैसे वलीउल्लाह को शैतानी इल्हाम हुआ तो दूसरे सामान्य लोगों जिन्होंने अभी अपनी साधना भी पूर्ण नहीं की वह इससे क्योंकर सुरक्षित रह सकते हैं और उन्हें वे नूरानी आँखें कहाँ प्राप्त हैं ताकि सय्यद अब्दुल क़ादिर और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की भांति शैतानी इल्हाम को पहचान लें। स्मरण रहे कि वे ज्योतिषी जो अरब में आंहज़रत (स.अ.व.) के अवतरण से पूर्व बहुत अधिक संख्या में थे उन लोगों को शैतानी इल्हाम बहुत होते थे और वे प्राय: इल्लाम द्वारा भविष्यवाणियां भी किया करते थे। आश्चर्य यह कि उन की कुछ भविष्यवाणियां सच्ची भी होती थीं। अत: इस्लामी किताबें इन वृत्तान्तों से भरी पड़ी हैं। अत: जो व्यक्ति शैतानी इल्हाम का इन्कारी है वह नबियों की समस्त शिक्षाओं का इन्कारी है और नुबुव्वत के समस्त सिलसिले का इन्कारी है। बाइबल में लिखा है कि एक बार चार सौ नबियों को शैतानी इल्हाम हुआ था और उन्होंने इल्हाम द्वारा जो एक सफेद जिन्न का करतब था एक बादशाह की विजय की भविष्यवाणी की। वह बादशाह बड़े अपमान के साथ उसी लड़ाई में मारा गया और बुरी तरह पराजित हुआ तथा एक नबी ⓟजिसे हज़रत जिब्राईल से इल्हाम मिला था उसने ⓟ18 यही सूचना दी कि बादशाह मारा जाएगा और कुत्ते उसका माँस खाएँगे और बहुत बड़ी पराजय होगी। अत: यह सूचना सच्ची निकली, परन्तु उन

चार सौ (400) नबी की भविष्यवाणी झूठी निकली।

यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इतनी प्रचुरता के साथ शैतानी इल्हाम भी होते हैं तो फिर इल्हाम से ईमान दूर होता है और कोई इल्हाम विश्वसनीय नहीं ठहरता, क्योंकि संभावना है कि शैतानी हो विशेषकर जब मसीह जैसे दृढ़ संकल्प नबी को भी ऐसी घटना से दो-चार होना पड़ा तो फिर इससे तो मुल्हम लोगों की कमर टूटती है तो इल्हाम क्या एक विपत्ति हो जाती है। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि निराश होने का कोई अवसर नहीं, संसार में ख़ुदा तआला का प्रकृति का नियम ऐसे ही चला आता है कि प्रत्येक उत्तम जौहर के साथ खोटी वस्तुएँ भी संलग्न हैं। देखो एक तो वे रत्न हैं जो समुद्र से निकलते हैं और दूसरे वे सस्ते रत्न हैं जिन्हें लोग स्वयं बना कर बेचते हैं। अब इस विचार से कि संसार में खोटे रत्न भी हैं सच्चे (खरे) रत्नों का क्रय-विक्रय बन्द नहीं हो सकता, क्योंकि वे जौहरी जिन्हें ख़ुदा तआला ने प्रतिभा दी है एक ही दृष्टि में पहचान लेते हैं कि यह असली है और यह नक़ली है। अतः इल्हामी रत्नों का जौहरी युग का इमाम होता है उसकी संगत में रह कर शीघ्र ही असली और नक़ली में अन्तर कर सकता है। हे सूफ़ियो ! और इस कीमियागरी में लिप्त लोगो तनिक होश संभाल कर उस मार्ग में क़दम रखो और भली-भांति स्मरण रखो कि सच्चा इल्हाम जो शुद्ध रूप से ख़ुदा तआला की ओर से होता है अपने साथ निम्नलिखित लक्षण रखता है:-

① - यह इस अवस्था में होता है कि जब मानव हृदय पीड़ाग्नि से पिघल कर स्वच्छ पानी की तरह ख़ुदा तआला की ओर बहता है इसी ओर हदीस का संकेत है कि क़ुर्आन शोक की अवस्था में उतरा, अतः तुम भी उसे शोकग्रस्त हृदय के साथ पढ़ो।

② - सच्चा इल्हाम अपने साथ एक आनन्द और उल्लास की विशेषता लाता है और अज्ञात कारण से विश्वास प्रदान करता है तथा एक

लोहे के खूंटे की तरह हृदय के अन्दर घुस जाता है तथा उसकी इबारत सुगम और दोष से पवित्र होती है।

Ⓟ③ - सच्चे इल्हाम में एक और महानता होती है तथा उससे हृदय पर एक ठोकर लगती है तथा शक्ति और दबदबे वाली आवाज़ के साथ हृदय पर उतरता है, परन्तु झूठे इल्हाम में चोरों, नपुंसकों और स्त्रियों की सी हल्की आवाज़ होती है क्योंकि शैतान चोर, नपुंसक और स्त्री है। Ⓟ19

④ - सच्चा इल्हाम अपने अन्दर ख़ुदा तआला की शक्तियों का प्रभाव रखता है तथा आवश्यक है कि उसमें भविष्यवाणियां भी हों और वे पूरी भी हो जाएँ।

⑤ - सच्चा इल्हाम मनुष्य को दिन-प्रतिदिन सदाचारी बनाता जाता है तथा आन्तरिक बनाता, अपवित्रताओं और मलिनताओं को शुद्ध करता है और नैतिक अवस्थाओं को उन्नति प्रदान करता है।

⑥ - सच्चे इल्हाम पर मनुष्य की समस्त आन्तरिक शक्तियां साक्षी हो जाती हैं और प्रत्येक शक्ति पर एक नवीन और शुद्ध प्रकाश पड़ता है और मनुष्य अपने अन्दर एक परिवर्तन पाता है तथा उसका पहला जीवन मर जाता है और नया जीवन आरम्भ होता है और वह लोगों की सामान्य सहानुभूति का माध्यम होता है।

⑦ - सच्चा इल्हाम एक ही आवाज़ पर समाप्त नहीं होता, क्योंकि ख़ुदा की आवाज़ एक क्रम रखती है। वह नितान्त सहिष्णु है जिसकी ओर ध्यान देता है उससे वार्तालाप करता है और प्रश्नों का उत्तर देता है और मनुष्य एक ही स्थान और एक ही समय में अपनी याचनाओं का उत्तर प्राप्त कर सकता है, यद्यपि इस वार्तालाप पर कभी अन्तराल का समय भी आ जाता है।

⑧ - सच्चे इल्हाम का मनुष्य कभी डरपोक नहीं होता और किसी इल्हाम के दावेदार के मुकाबले से यद्यपि वह कैसा ही विरोधी हो डरना

नहीं जानता है कि मेरे साथ ख़ुदा है वह उसे अपमान के साथ पराजित करेगा।

⑨ - सच्चा इल्हाम अधिकांश ज्ञानों और अध्यात्मज्ञानों के जानने का माध्यम होता है क्योंकि ख़ुदा अपने मुल्हम को अज्ञानी और असभ्य रखना नहीं चाहता।

⑩ - सच्चे इल्हाम के साथ और भी बहुत सी बरकतें होती हैं और ख़ुदा के वार्तालाप करने वाले को परोक्ष से सम्मान प्रदान किया जाता है और रौब दिया जाता है।

Ⓟ20 आजकल का युग एक ऐसा दोषपूर्ण युग है कि अधिकांश दार्शनिक स्वभाव तथा नेचरी और ब्रह्म समाजी लोग इस इल्हाम के Ⓟइन्कारी हैं इसी इन्कार में कई इस संसार से चले भी गए, परन्तु मूल बात यह है कि सत्य, सत्य है यद्यपि सम्पूर्ण विश्व उसका इन्कार करे और झूठ, झूठ है यद्यपि सम्पूर्ण विश्व उसका सत्यापन करे। जो लोग ख़ुदा तआला को मानते और उसे विश्व का व्यवस्थापक स्वीकार करते हैं तथा उसे बहुत देखने वाला, बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला विचार करते हैं उनकी यह मूर्खता है कि इतने इक़रारों के बाद फिर ख़ुदा के कलाम के इन्कारी रहें। क्या जो देखता है, जानता है और बिना भौतिक साधनों के उस का ज्ञान कण-कण पर व्याप्त है वह बोल नहीं सकता। यह कहना भी ग़लत है कि उसके बोलने की शक्ति पहले तो थी और अब बन्द हो गई जैसे उसके बोलने की विशेषता आगे नहीं अपितु पीछे रह गई है, परन्तु ऐसा कहना बहुत निराश करता है। यदि ख़ुदा तआला की विशेषताएँ भी किसी समय तक चल कर फिर समाप्त हो जाती हैं तथा उनका कुछ निशान शेष नहीं रहता तो फिर शेष विशेषताओं में भी सन्देह की गुंजाइश है। खेद ऐसी अक़्लों और ऐसी आस्थाओं पर कि ख़ुदा तआला की समस्त विशेषताओं को स्वीकार करके फिर हाथ में छुरी लेकर बैठते हैं और उन

में से एक आवश्यक भाग काट कर फेंक देते हैं। खेद कि आर्यों ने तो वेद तक ही ख़ुदा तआला के कलाम पर मुहर लगा दी थी, परन्तु ईसाइयों ने भी इल्हाम को निर्मम न रहने दिया, जैसे हज़रत मसीह तक ही मनुष्यों को व्यक्तिगत प्रतिभा और मारिफ़त प्राप्त करने के लिए चश्मदीद इल्हामों की आवश्यकता थी और भविष्य में ऐसी दुर्भाग्यशाली नस्ल है कि वह हमेशा के लिए वंचित है, हालांकि मनुष्य हमेशा चश्मदीद वृत्तान्त और व्यक्तिगत प्रतिभा का मुहताज है। धर्म उसी युग तक ज्ञान के रंग में रह सकता है जब तक ख़ुदा तआला की विशेषताएं ताज़ा से ताज़ा झलक दिखाती रहें अन्यथा कहानियों के रूप में होकर शीघ्र मर जाता है। क्या ऐसी असफलता को कोई मानव अन्तरात्मा स्वीकार कर सकती है जब कि हम अपने अन्दर इस बात का अहसास पाते हैं कि हम उस पूर्ण मारिफ़त के मुहताज हैं जो किसी प्रकार ख़ुदा से वार्तालाप और बड़े-बड़े निशानों के अभाव में पूर्ण नहीं हो सकती तो ख़ुदा तआला की दया हम पर इल्हामों का द्वार किस प्रकार बन्द कर सकती है। क्या इस युग में हमारे हृदय और हो गए हैं या ख़ुदा और हो गया है। यह तो हम ने माना और स्वीकार किया कि एक युग में एक का इल्हाम लाखों लोगों की मारिफ़त को ताज़ा कर सकता है तथा एक-एक व्यक्ति में होना आवश्यक नहीं, परन्तु हम यह स्वीकार नहीं कर सकते कि इल्हाम की सिरे से चटाई ही लपेट दी जाए ⓟऔर हमारे हाथ में केवल ऐसे क़िस्से हों जिन्हें हमने स्वयं अपनी आँखों ⓟ21 से देखा नहीं। स्पष्ट है कि जब एक बात सैकड़ों वर्षों से कहानी के रूप में ही चली जाए और उसके सत्यापन के लिए कोई नूतन नमूना पैदा न हो तो अधिकांश स्वभाव जो अपने अन्दर दार्शनिक रंग रखते हैं उस कहानी को बिना किसी ठोस सबूत के स्वीकार नहीं कर सकते, विशेषकर जब कहानियाँ ऐसी बातों को सिद्ध करें कि जो हमारे युग में अनुमान के विपरीत मालूम हों। यही कारण है कि कुछ समयोपरांत हमेशा दार्शनिक स्वभाव

मनुष्य ऐसे चमत्कारों पर उपहास करते आए हैं और सन्देह की सीमा तक भी नहीं ठहरते और यह उनका अधिकार भी होता है, क्योंकि उनके हृदय में गुज़रता है कि जब कि ख़ुदा वही है और विशेषताएं वही और आवश्यकताएँ भी वही हमारे सामने हैं तो फिर इल्हाम का सिलसिला बन्द क्यों है, हालांकि समस्त आत्माएं कोलाहल मचा रही हैं कि हम भी ताज़ा मा'रिफ़त के मुहताज हैं, इसी कारण हिन्दुओं में लाखों लोग नास्तिक हो गए क्योंकि पंडितों ने बार-बार उन्हें यही शिक्षा दी कि इल्हाम और कलाम का सिलसिला करोड़ों वर्षों से बन्द है। अत: उनके हृदय में शंकाएँ उत्पन्न हुईं कि वेद के युग की तुलना में हमारा युग परमेश्वर के ताज़ा इल्हामों का अधिक मुहताज था। यदि इल्हाम एक सत्य और वास्तविकता है तो वेद के पश्चात् इस का सिलसिला क्यों स्थापित नहीं रहा। इसी कारण आर्यावर्त में नास्तिकता फैल गई। अत: हिन्दुओं में सैकड़ों ऐसे सम्प्रदाय मिलेंगे जो वेद से उपहास करते तथा उस से इन्कारी हैं, उनमें से एक जैन मत रखने वाला सम्प्रदाय है और वास्तव में सिखों का सम्प्रदाय भी इन्हीं विचारों के कारण हिन्दुओं से पृथक हुआ है क्योंकि प्रथम तो हिन्दू धर्म में संसार की सैकड़ों वस्तुओं को परमेश्वर का भागीदार बनाया गया है और द्वैतवाद की इतनी बहुलता है जिसमें परमेश्वर का कुछ पता नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त जो वेद के इल्हामी होने का दावा है यह प्रमाणरहित एक वृत्तान्त है जिसे लाखों वर्षों की ओर हवाला दिया जाता है, ताज़ा सबूत कोई नहीं। इसी कारण जो पूर्ण सिख हैं वे वेद को नहीं मानते। अत: 'अख़बार आम' लाहौर 26, सितम्बर 1898 ई. में एक सिख सज्जन का एक लेख इसी बारे में प्रकाशित हुआ है। उन्होंने इस बात के समर्थन में कि ख़ालसा समूह वेद को नहीं मानता और उन्हें गुरुओं की ओर से आदेश है कि वेद को कदापि न मानें। ग्रन्थ के शबद अर्थात् शे'र भी लिखे हैं जिनका सार यही है कि वेद को कदापि न मानना तथा इक़रार किया है कि Ⓟहम लोग वेद

Ⓟ22

के अनुयायी कदापि नहीं है और न उसे स्वीकार करते हैं। हां उसने क़ुर्आन करीम के अनुसरण का भी इक़रार नहीं किया, परन्तु उस का कारण यह है कि सिखों को इस्लाम का ज्ञान नहीं और वे उस प्रकार से अपरिचित हैं जो शक्तिशाली और सदैव स्थापित रहने वाले और अन्य को स्थापित रखने वाले ख़ुदा ने इस्लाम में रखा हुआ है और अज्ञानता तथा द्वेष के कारण उन्हें उन प्रकाशों का ज्ञान भी नहीं है कि जो क़ुर्आन करीम में मरे पड़े हैं अपितु जिस सीमा तक जातिगत तौर पर उनके संबंध हिन्दुओं से हैं मुसलमानों से नहीं हैं अन्यथा उनके लिए यही पर्याप्त था कि उस वसीयत पर चलते कि जैसे चोला साहिब में बावा नानक यह लिख गए हैं कि इस्लाम के अतिरिक्त कोई धर्म सही और सच्चा नहीं है। अतः ऐसे बुज़ुर्ग की इस आवश्यक वसीयत को नष्ट कर देना नितान्त खेदजनक बात है। ख़ालसा लोगों के हाथ में केवल एक चोला साहिब ही है जो बावा साहिब के हाथों की यादगार है तथा ग्रन्थ के शबद तो बहुत बाद में एकत्र किए गए हैं जिनमें अन्वेषकों को बहुत कुछ आपत्ति है। ख़ुदा जाने इसमें क्या-क्या परिवर्तन हुए हैं और किन-किन लोगों की वाणियों का संग्रह है। जो भी हो यह बात यहां वर्णन करने योग्य नहीं है। हमारा मूल उद्देश्य तो यह है कि लोगों का ईमान ताज़ा रखने के लिए ताज़ा इल्हामों की सदैव आवश्यकता है और वे इल्हाम अधिकारिक शक्ति से पहचाने जाते हैं क्योंकि ख़ुदा के अतिरिक्त किसी शैतान, जिन्न, भूत में अधिकारिक शक्ति नहीं है युग के इमाम के इल्हाम से शेष इल्हामों का सही होना सिद्ध होता है।

हम वर्णन कर चुके हैं कि युग का इमाम अपने स्वभाव में इमामत की शक्ति रखता है और क़ुदरत के हाथ ने उसके अन्दर पेशवाई का गुण फूंका होता है तथा यह अल्लाह का नियम है कि वह मनुष्यों को बिखरा हुआ छोड़ना नहीं चाहता अपितु जैसा कि उसने सौर व्यवस्था में बहुत से सितारों को शामिल करके सूर्य को उस व्यवस्था की बादशाही प्रदान

की है, इसी प्रकार वह सामान्य मोमिनों को सितारों की भांति यथायोग्य प्रकाश प्रदान करके युग के इमाम को उनका सूर्य ठहराया है और यह ख़ुदा का नियम उसकी सृष्टि में यहां तक पाया जाता है कि मधु मक्खियों में भी यह व्यवस्था मौजूद है कि उनमें भी एक इमाम होता है जो यासूब कहलाता है Ⓟऔर भौतिक शासनों में भी ख़ुदा तआला ने यही इरादा किया है कि एक जाति में एक अमीर और बादशाह हो तथा ख़ुदा की लानत उन लोगों पर है जो फूट पसन्द करते हैं और एक अमीर के आदेश के अधीन नहीं चलते। हालांकि अल्लाह तआला फ़रमाता है - اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ[1] ऊलिलअम्र से अभिप्राय भौतिक तौर पर बादशाह और आध्यात्मिक तौर पर युग का इमाम है तथा भौतिक तौर पर जो व्यक्ति हमारे उद्देश्यों का विरोधी न हो तथा हमें उस से धार्मिक लाभ प्राप्त हो सके वह हम में से है। इसीलिए मेरी जमाअत को मेरी नसीहत यही है कि वह अंग्रेज़ों की बादशाहत को अपने ऊल्लिअम्र में शामिल करें और हार्दिक निष्ठा से उनके आज्ञाकारी रहें क्योंकि वे हमारे धार्मिक उद्देश्यों को क्षति पहुँचाने वाले नहीं हैं अपितु हमें उनके अस्तित्व से बहुत आराम प्राप्त हुआ है और हम बेईमानी करेंगे यदि इस बात का इक़रार न करें कि अंग्रेज़ों ने हमारे धर्म को एक प्रकार की वह सहायता दी है कि जो हिन्दुस्तान के इस्लामी बादशाहों को भी प्राप्त न हो सकी, क्योंकि हिन्दुस्तान के कुछ इस्लामी बादशाहों ने अपने साहस की कमी के कारण पंजाब प्रान्त को छोड़ दिया था, उनकी इस लापरवाही से सिखों की विभिन्न सरकारों के समय में हम पर और हमारे धर्म पर वे संकट आए कि मस्जिदों में सामूहिक तौर पर नमाज़ पढ़ना तथा उच्च स्वर में अज़ान देना भी कठिन हो गया था तथा पंजाब में इस्लाम धर्म मर गया था। फिर अंग्रेज़ आए और अंग्रेज़ क्या हमारे शुभ भाग्य हमारी ओर वापस हुए और उन्होंने इस्लाम धर्म की सहायता की और हमारे धार्मिक कर्त्तव्यों

Ⓟ23

---

[1]-अन्निसा-60

में हमें पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की और हमारी मस्जिदें मुक्त कराई गईं तथा एक लम्बी अवधि के पश्चात पंजाब में इस्लामी आचरण दिखाई देने लगा। अतः क्या यह उपकार स्मरण रखने योग्य नहीं? अपितु सत्य यह है कि कुछ हतोत्साह इस्लामी बादशाहों ने तो अपनी लापरवाहियों से हमें क़ुब्रिस्तान में ढकेल दिया था और अंग्रेज़ हाथ पकड़ कर फिर हमें बाहर निकाल लाए। अतः अंग्रेज़ों के विरुद्ध देशद्रोह की खिचड़ी पकाते रहना ख़ुदा तआला की नेमतों को भुलाना है।

पुनः मूल कलाम की ओर लौटते हुए कहता हूँ कि क़ुर्आन करीम ने जैसा कि भौतिक रहन-सहन के लिए यह है कि एक बादशाह के शासन के अधीन होकर चलें यही चेतावनी आध्यात्मिक रहन-सहन के लिए भी है। ⓟइसी की ओर संकेत है कि अल्लाह तआला यह दुआ सिखाता है- ⓟ17

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ①

अतः विचार करना चाहिए कि यों तो कोई मोमिन अपितु कोई मनुष्य अपितु कोई प्राणी भी ख़ुदा तआला की ने'मत से ख़ाली नहीं, परन्तु नहीं कह सकते कि उनके अनुसरण के लिए ख़ुदा तआला ने यह आदेश दिया है। अतः इस आयत के अर्थ यह हैं कि जिन लोगों पर पूर्णरूपेण आध्यात्मिक अनुकम्पाओं की वर्षा हुई है उनके मार्गों की हमें सामर्थ्य प्रदान कर ताकि हम उनका अनुसरण करें। अतः इस आयत में यही संकेत है कि तुम युग के इमाम के साथ हो जाओ।

स्मरण रहे कि युग के इमाम के शब्द में नबी, रसूल, मुहद्दिस, मुजद्दिद सब सम्मिलित हैं परन्तु जो लोग ख़ुदा की प्रजा को सदुपदेश और मार्ग-दर्शन के लिए अवतरित नहीं हुए और न वे विशेषताएं उन्हें प्रदान की गईं वे यद्यपि कि वली हों या अब्दाल हों युग के इमाम नहीं कहला सकते।

अब अन्त में प्रश्न शेष रहा कि इस युग में युग का इमाम कौन है जिसका अनुसरण करना सामान्य मुसलमानों, संयमियों, स्वप्न दृष्टाओं

①-अल्फ़ातिहा-6,7

और मुल्हमों पर ख़ुदा तआला की ओर से अनिवार्य ठहराया गया है। अत: मैं इस समय निसंकोच कहता हूँ कि ख़ुदा तआला की कृपा से वह

युग का इमाम मैं हूँ

और ख़ुदा तआला ने मुझ में वे समस्त लक्षण और समस्त शर्तें एकत्र की हैं और इस सदी के सर पर मुझे अवतरित किया है जिसमें से पन्द्रह वर्ष व्यतीत भी हो गए और मैं ऐसे समय में प्रकट हुआ हूँ कि इस्लामी आस्थाएँ मतभेदों से मर गई थीं और कोई आस्था मतभेदों से रिक्त न थी। इसी प्रकार मसीह के उतरने के बारे में नितान्त ग़लत विचार फैल गए थे और इस आस्था में भी मतभेदों की यह अवस्था थी कि कोई हज़रत ईसा के जीवित होने को मानता था तो कोई मृत्यु को कोई भौतिक उतरना मानता था तो कोई प्रतिबिम्ब स्वरूप उतरने का विश्वास रखता था, कोई दमिश्क में उन्हें उतार रहा था, तो कोई मक्का में, कोई बैतुलमुक़द्दस में तो कोई इस्लामी सेना में, कोई विचार करता था कि हिन्दुस्तान में उतरेंगे। अत: ये समस्त भिन्न-भिन्न रायें और भिन्न-भिन्न कथन एक निर्णय करने वाले हकम (मध्यस्थ) की मांग करते थे। अत: वह हकम मैं हूँ। मैं आध्यात्मिक Ⓟ25 तौर पर सलीब को तोड़ने के लिए Ⓟतथा मतभेदों का निवारण करने के लिए भेजा गया हूँ। इन्हीं दोनों बातों ने मांग की कि मैं भेजा जाऊँ। मेरे लिए आवश्यक नहीं था कि मैं अपनी सच्चाई का कोई सबूत प्रस्तुत करूँ क्योंकि आवश्यकता स्वयं सबूत है, परन्तु फिर भी मेरे समर्थन में ख़ुदा तआला ने कई निशान प्रकट किए हैं और मैं जैसा कि अन्य मतभेदों में निर्णय करने के लिए हकम (मध्यस्थ) हूं ऐसा ही ईसा की मृत्यु और जीवन के बारे में भी हकम हूँ। मैं मसीह की मृत्यु के बारे में इमाम मालिक, इब्ने हज़्म और मौ'तज़िला के कथन को सही ठहराता हूँ और दूसरे अहले सुन्नत को दोषी समझता हूँ। अत: मैं हकम होने की दृष्टि से इन झगड़ा करने वालों में यह आदेश जारी करता हूँ कि नुज़ूल (उतरने) के संक्षिप्त अर्थों में अहले

सुन्नत का वह समूह सच्चा है क्योंकि मसीह का प्रतिबिम्ब के तौर पर उतरना आवश्यक था। हाँ नुज़ूल का विवरण वर्णन करने में उन लोगों ने ग़लती की है। नुज़ूल प्रतिबिम्बित विशेषता थी न कि वास्तविक तथा मसीह की मृत्यु के मामले में मौतज़िला और इमाम मालिक और इब्ने हज़्म इत्यादि उनसे सहमत लोग सच्चे हैं क्योंकि क़ुर्आन की इस आयत के स्पष्ट आदेश अर्थात् فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي के अनुसार मसीह का ईसाइयों के बिगड़ने से पूर्व मृत्यु पाना आवश्यक था। यह मेरी ओर से बतौर हकम निर्णय है, अब जो व्यक्ति मेरे निर्णय को स्वीकार नहीं करता वह उसे स्वीकार नहीं करता जिसने मुझे हकम नियुक्त किया है। यदि प्रश्न यह प्रस्तुत हो कि तुम्हारे 'हकम' होने का सबूत क्या है? इसका उत्तर यह है कि जिस युग के लिए 'हकम'आना चाहिए था वह युग मौजूद है और जिस क़ौम की सलीबी ग़लतियों को हकम ने सुधारना था वह क़ौम मौजूद है और जिन निशानों ने उस हकम पर गवाही देना थी वे निशान प्रकट हो चुके हैं और अब भी निशानों का क्रम आरम्भ है। आकाश निशान प्रकट कर रहा है, पृथ्वी निशान प्रकट कर रही है। मुबारक वे अब जिनकी आँखें बन्द न रहें।

मैं यह नहीं कहता कि पहले निशानों पर ही ईमान लाओ अपितु मैं कहता हूँ कि यदि मैं हकम नहीं हूँ तो मेरे निशानों का मुकाबला करो। मेरे मुकाबले पर जो कि आस्थाओं में मतभेद के समय आया हूँ केवल हकम के विवाद में प्रत्येक का अधिकार है जिसे मैं पूरा कर चुका हूँ। ख़ुदा ने मुझे चार निशान दिए हैं-

[1] - मैं क़ुर्आन करीम में चमत्कार के प्रतिबिम्ब पर अरबी भाषा की सुगम और अलंकृत शैली का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं जो इसका मुकाबला कर सके।

[2] - मैं क़ुर्आन करीम की सच्चाइयाँ और उसके आध्यात्म ज्ञानों को वर्णन करने का निशान दिया गया हूँ, Ⓟकोई नहीं जो उसका मुकाबला Ⓟ26

कर सके।

[3] - मैं अत्यधिक दुआएं स्वीकार होने का निशान दिया गया हूँ,कोई नहीं जो इसका मक़ाबला कर सके। मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ कि मेरी तीस हज़ार के लगभग दुआएं स्वीकार हो चुकी हैं और उन का मेरे पास सबूत है।

[4] - मैं परोक्ष की ख़बरों का निशान दिया गया हूँ, कोई नहीं जो इस का मुक़ाबला कर सके। ये ख़ुदा तआला की गवाहियां मेरे पास हैं तथा नबी करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणियां मेरे पक्ष में चमकते हुए निशानों की भांति पूरी हुईं।

آسماں باردنشان الوقت مے گوید زمین این دو شاہد از پئے تصدیق من استادہ اند*

काफ़ी समय हुआ रमज़ान माह में सूर्य और चन्द्र ग्रहण हो गया, हज भी बन्द हुआ और हदीस के अनुसार देश में प्लेग भी फैली। मुझ से और बहुत से निशान प्रकट हुए जिनके सैकड़ों हिन्दू और मुसलमान साक्षी हैं जिन की मैंने चर्चा नहीं की। इन समस्त कारणों से मैं युग का इमाम हूँ और ख़ुदा मेरे समर्थन में है और वह मेरे लिए एक तेज़ तलवार की तरह खड़ा है। मुझे सूचना दी गई है कि जो उद्दण्तापूर्वक मेरे सामने खड़ा होगा वह लज्जित और अपमानित किया जाएगा। देखो मैंने वह आदेश पहुँचा दिया जो मेरे ज़िम्मे था। ये बातें मैं अपनी किताबों में कई बार लिख चुका हूँ, परन्तु जिस घटना ने मुझे इन बातों के पुनः लिखने की प्रेरणा दी वह मेरे एक मित्र की सोच-विचार की ग़लती है जिस पर सूचित होने से मैंने एक नितान्त आहत हृदय के साथ इस पत्रिका को लिखा है। उस घटना का विवरण यह है कि इन दिनों में अर्थात् माह सितम्बर 1898 ई. में जो मुताबिक जमादिउल अव्वल 1316 हिज्री है मेरे एक मित्र

---

* आकाश निशआनों की वर्षा कर रहा है पृथ्वी भी यही कह रही है। यह दोनों गवाह मेरे सत्यापन के लिए खड़े हैं। अनुवादक

जिन्हें मैं एक निर्दोष, भाग्यशाली, संयमी और परहेज़गार जानता हूँ और उनके बारे में प्रारम्भ से मेरी नितान्त सुधारण है وَاللّٰهُ حَسِيْبُهٗ परन्तु कुछ विचारों में ग़लती में पड़ा हुआ समझता हूँ और उस ग़लती की हानि से उन के सन्दर्भ में शंका भी रखता हूँ। वह यात्रा का कष्ट उठा कर और मेरे एक और प्रिय मित्र को साथ लेकर मेरे पास क़ादियान में पहुँचे और मुझे अपने बहुत से इल्हाम सुनाए। मुझे नितान्त प्रसन्नता हुई Ⓟकि ख़ुदा Ⓟ27 तआला ने उन्हें इल्हामों से सम्मानित किया है, परन्तु उन्होंने इल्हामों के क्रम में अपना एक यह स्वप्न भी सुनाया कि मैंने आपके बारे में कहा है कि मैं उनकी बैअत क्यों करूँ अपितु उन्हें मेरी बैअत करना चाहिए। इस स्वप्न से ज्ञात हुआ कि वह मुझे मसीह मौऊद नहीं मानते और यह कि वह सच्ची इमामत के मामले से अनभिज्ञ हैं। अत: मेरी सहानुभूति ने चाहा कि मैं उनके लिए वास्तविक इमामत के बारे में यह पत्रिका लिखूं और बैअत की वास्तविकता का उल्लेख करूँ। अत: मैं वास्तविक इमाम के बारे में जिसे बैअत लेने का अधिकार है इस पत्रिका मैं बहुत कुछ लिख चुका हूँ। रही बात बैअत की वास्तविकता की तो वह यह है कि बैअत का शब्द बैअ से बना है और बैअ परस्पर सहमति के मामले को कहते हैं जिस में एक वस्तु दूसरी वस्तु के बदले में दी जाती है। अत: बैअत से उद्देश्य यह है कि बैअत करने वाला अपने आप को उसके समस्त साधनों सहित एक पथ-प्रदर्शक के हाथ में इस उद्देश्य से बेचे ताकि उसके बदले में वे सच्चे अध्यात्म ज्ञान और पूर्ण बरकतें प्राप्त करे जो ख़ुदा की पहचान, मुक्ति और प्रसन्नता का कारण हों। इस से स्पष्ट है कि बैअत से केवल तौबा (पापों से प्रायश्चित) अभीष्ट नहीं क्योंकि ऐसा प्रायश्चित तो मनुष्य स्वयं भी कर सकता है अपितु वे अध्यात्म ज्ञान और बरकतें तथा निशान अभीष्ट हैं जो वास्तविक तौबा की ओर आकृष्ट करते हैं। बैअत का मूल उद्देश्य यह है कि स्वयं को अपने पथ-प्रदर्शक की दासता में देकर उसके

बदले में वे ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान और बरकतें ले जिन से ईमान सुदृढ़ हो, मारिफ़त बढ़े और ख़ुदा तआला से शुद्ध संबंध पैदा हो और इसी प्रकार सांसारिक नर्क से मुक्त होकर आख़िरत (परलोक) के नर्क से मुक्ति प्राप्त हो और भौतिक नेत्रहीनता से स्वस्थ हो कर आख़िरत की नेत्रहीनता से भी अमन प्राप्त हो। अतः यदि इस बैअत का फल देने का कोई मर्द हो तो नितान्त अधमता होगी कि कोई व्यक्ति जान-बूझ कर इस से मुख फेरे। मेरे प्रिय ! हम तो अध्यात्म ज्ञानों, सच्चाइयों और आकाशीय बरकतों के भूखे-प्यासे हैं और एक समुद्र भी पीकर तृप्त नहीं हो सकते। अतः यदि हमें कोई अपनी दासता में लेना चाहे तो यह बहुत आसान उपाय है कि बैअत के अर्थ और उसकी मूल दार्शनिकता को मास्तिष्क में रख कर यह क्रय-विक्रय हम से कर ले और यदि उसके पास ऐसी सच्चाइयां, अध्यात्म ज्ञान और आकाशीय बरकतें हों जो हमें नहीं दी गईं या उस पर वे क़ुर्आनी ⓟ28 ज्ञान खोले गए हैं जो हम पर नहीं खोले गए तो बिस्मिल्लाह ⓟवह बुज़ुर्ग हमारी दासता और अनुसरण का हाथ ले और वे आध्यात्मिक ज्ञान और क़ुर्आनी सच्चाइयां तथा आकाशीय बरकतें हमें प्रदान करे। मैं तो अधिक कष्ट देना ही नहीं चाहता, हमारे मुल्हम मित्र किसी एक जल्से में सूरह 'इख़लास' की ही सच्चाइयां और अध्यात्म ज्ञान वर्णन करें जिस से हज़ार गुना अधिक हम वर्णन न कर सकें तो हम उनके आज्ञाकारी हैं।

ندارد کسے باتو ناگفتہ کار ولیکن چوگفتی دلیلش بیار*

बहरहाल यदि आप के पास वे सच्चाइयां, अध्यात्म ज्ञान और बरकतें हैं जो अपने अन्दर चमत्कारिक प्रभाव रखती हैं तो फिर मैं क्या मेरी सम्पूर्ण जमाअत आपकी बैअत करेगी और कोई नितान्त अधम होगा जो ऐसा न करे, परन्तु मैं क्या कहूँ और क्या लिखूँ क्षमा मांग कर कहता हूँ कि

---

* अकथनीय बात पर पकड़ नहीं होती, परन्तु जब तू कोई बात करता है तो सबूत प्रस्तुत कर। अनुवादक

जिस समय मैंने आप के लिखे हुए इल्हाम सुने थे उन में भी कुछ स्थानों पर व्याकरण संबंधी दोष थे आप नाराज़ न हों मैंने मात्र सदभावना और विनम्रता से धार्मिक उपदेश के तौर पर यह भी वर्णन कर दिया है। इसके बावजूद मेरे निकट इल्हामों में किसी अज्ञानी और अनपढ़ के इल्हामी वाक्यों में व्याकरण संबंधी भूल हो जाए तो मूल इल्हाम एतिराज़ योग्य नहीं हो सकता। यह एक नितान्त सूक्ष्म बात है और विस्तार चाहती है जिसका यह अवसर नहीं है। यदि ऐसी ग़लतियां सुन कर कोई नीरस मुल्ला जोश में आ जाए तो वह भी विवश है क्योंकि आध्यात्मिक फ़्लास्फ़ी के कूचे में उसे अधिकार नहीं, परन्तु यह निम्नस्तर का इल्हाम कहलाता है जो ख़ुदा तआला के प्रकाश की पूर्ण झलक से रंगीन नहीं होता क्योंकि इल्हाम तीन स्तरों का होता है। निम्न, मध्यम और उच्च। बहरहाल उन ग़लतियों से मुझे लज्जित होना पड़ा और मैं अपने हृदय में दुआ करता था कि मेरे प्रिय मित्र ख़ुदा की ओर ध्यान* में अधिक उन्नति करें कि जैसे-जैसे Ⓟहृदय की शुद्धता बढ़ेगी वैसे ही इल्हाम में अलंकृत शैली की शुद्धता Ⓟ29 बढ़ेगी। यही रहस्य है कि क़ुर्आन की वह्यी दूसरे समस्त नबियों की वह्यिों से अध्यात्म ज्ञानों के अतिरिक्त अलंकृत और सुगम शैली में भी बढ़कर है क्योंकि हमारे नबी करीम (स.अ.व.) को सर्वाधिक हार्दिक शुद्धि दी गई थी। अत: वह वह्यी अर्थों की दृष्टि से आध्यात्मिक ज्ञानों के रूप में तथा शाब्दिक दृष्टि से सुगम और अलंकृत शैली के रूप में प्रकट हुई। मेरे मित्र यह भी स्मरण रखें कि जैसा कि मैंने वर्णन किया है बैअत एक क्रय-विक्रय का मामला है और मैं शपथ लेते हुए कहता हूँ कि हमारे मित्र मौलवी अब्दुल करीम साहिब फ़ज़िल धर्मोपदेश देते समय क़ुर्आन करीम की जितनी वास्तविकताएं और अध्यात्म कला-कौशल वर्णन करते हैं मुझे

* मेरा विश्वास है कि यदि यह प्रिय मित्र अधिक ध्यान करेंगे तो शीघ्र ही उनके इल्हाम में एक पूर्णता का रंग पैदा हो जाएगा। इसी से.

कदापि आशा नहीं कि उनका हज़ारवां भाग भी मेरे इन प्रिय मित्र के मुख से निकल सके। इसका कारण यही है कि इल्हामी ढंग अभी अपूर्ण और कसबी (परिश्रम द्वारा प्राप्त) ढंग पूर्णतया छोड़ा हुआ। न मालूम किसी अन्वेषक से क़ुर्आन सुनने का भी अब तक अवसर प्राप्त हुआ या नहीं। *आप ख़ुदा के लिए रुष्ट न हों, आप ने अब तक बैअत की वास्तविकता को नहीं समझा कि इसमें क्या देते और क्या लेते हैं। हमारी जमाअत में और मेरी बैअत करने वाले लोगों में एक मर्द हैं जो प्रकाण्ड विद्वान हैं और वह मौलवी हक़ीम हाफ़िज़ हाजी नूरुद्दीन साहिब हैं जो मानो समस्त संसार की तफ़्सीरें अपने साथ रखते हैं और ऐसा ही उनके हृदय में सहस्त्रों क़ुर्आनी ज्ञानों का भण्डार है। यदि आपको वास्तव में बैअत लेने का सम्मान दिया गया है तो आप क़ुर्आन का एक सिपारह उन को ही क़ुर्आन की सच्चाइयों और उसके ज्ञानों सहित पढ़ा दें। ये लोग दीवाने तो नहीं कि उन्होंने मेरी ही बैअत कर ली और दूसरे मुल्हमों को छोड़ दिया। यदि आप हज़रत मौलवी साहिब का अनुसरण करते तो आपके लिए उचित होता। आप विचार करें कि कथित विद्वान जो घर छोड़कर मेरे पास आ बैठे और कच्चे कोठों में कष्ट से जीवन व्यतीत करते हैं क्या वह बिना किसी बात के देखे जान-बूझ

---

* नोट : - हम इन्कार नहीं करते कि आप पर ख़ुदा के प्रदत्त ज्ञान के झरने खुल जाएं, परन्तु अभी तो नहीं, स्वप्नों और कश्फ़ों पर रूपक और कल्पनाओं का प्रभुत्व होता है, परन्तु आपके अपने स्वप्न को वास्तविकता पर चरितार्थ कर लिया। मुजद्दिद साहिब सरहिन्दी ने एक कश्फ़ में देखा था कि आंहज़रत (स.अ.व.) को उनके द्वारा 'ख़लीलुल्लाह' का पद मिला और इस से बढ़ कर शाह वलीउल्लाह साहिब ने देखा था कि जैसे आंहज़रत (स.अ.व.) ने उन के हाथ पर बैअत की है, परन्तु उन्होंने अपनी ज्ञान रूपी विशालता के कारण वह विचार न किया जो आप ने किया, अपितु व्याख्या की। इसी से.

कर इस कष्ट को सहन किए हुए हैं? हमारे प्रिय और मित्र मुल्हम साहिब स्मरण रखें कि वह इन विचारों में बहुत बड़ी ग़लती में लिप्त हैं। यदि वह अपनी इल्हामी शक्ति से पूर्व आदरणीय मौलवी साहिब को क़ुरआनी ज्ञान का नमूना दिखाएं Ⓟऔर इस स्वभाव के विपरीत अद्भुत झलक Ⓟ30 से नूरदीन जैसे क़ुर्आन के प्रेमी से बैअत लें तो फिर मैं और मेरी सम्पूर्ण जमाअत आप पर बलिहारी है। क्या थोड़े अज्ञात इल्हामी वाक्यों से कि वे भी अधिकतर सही नहीं यह पद प्राप्त हो सकता है कि मनुष्य स्वयं को युग का इमाम समझ ले। मेरे प्रिय ! युग के इमाम के लिए बहुत सी शर्तें हैं तभी तो वह एक संसार का मुकाबला कर सकता है

ہزار نکتۂ باریک تر زمو اینجاست   نہ ہر کہ سر بتراشد قلندری داند*

मेरे प्रिय मुल्हम ! इस धोखे में न रहें कि उन पर प्रायः इल्हामी वाक्य उतरते हैं। मैं सच-सच कहता हूँ कि मेरी जमाअत में इस प्रकार के मुल्हम इतने हैं कि कुछ के इल्हामों की एक पुस्तक बन जाती है। सय्यद अमीर अली शाह प्रत्येक सप्ताह के पश्चात इल्हामों का एक पृष्ठ भेजते हैं और कुछ स्त्रियाँ मेरा सत्यापन करती हैं जिन्होंने अरबी का एक शब्द तक नहीं पढ़ा और अरबी में इल्हाम होता है। मैं नितान्त आश्चर्य में हूँ कि आप की तुलना में उसके इल्हामों में ग़लती कम होती है। 28, सितम्बर 1898 ई. को उन के कुछ इल्हाम उनके सगे भाई फ़तह मुहम्मद बुज़दार के द्वारा प्राप्त हुए। इसी प्रकार हमारी जमाअत में कई मुल्हम मौजूद हैं। एक लाहौर में ही हैं, परन्तु क्या ऐसे इल्हामों से कोई व्यक्ति युग के इमाम की बैअत से निस्पृह हो सकता है और मुझे तो किसी की बैअत से कोई बहाना नहीं, परन्तु बैअत का उद्देश्य आध्यात्मिक ज्ञानों का वरदान और ईमान की दृढ़ता है। अब बताइए कि आप बैअत में कौन से ज्ञान सिखाएंगे

---

* यहां बाल से बारीक सहस्त्रों रहस्य हैं, यों नहीं कि जो भी सर मुंडाले क़लन्दरी समझ ले। अनुवादक

और कौन सी क़ुर्आनी सच्चाइयां वर्णन करेंगे। अब आइए और इमामत का जौहर प्रदर्शित कीजिए, हम सब बैअत करते हैं।

हज़रते नासिह गर आएं दीदओ दिल फ़र्शे राह
पर कोई मुझ को तो समझाए कि समझाएंगे क्या

मैं नगाड़े की आवाज़ से कह रहा हूँ कि जो कुछ ख़ुदा ने मुझे प्रदान किया है वह समस्त इमामत के निशान के तौर पर है जो व्यक्ति इस इमामत के निशान को दिखाए और सिद्ध करे कि वह विशेषताओं में मुझ से बढ़कर है मैं बैअत के लिए अपना हाथ देने को तैयार हूँ, परन्तु ख़ुदा के वादों में परिवर्तन नहीं, उसका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। आज से लगभग बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम लिखा ⓟहै - ⓟ31

اَلرَّحْمٰن عَلَّمَ الْقُرْاٰن۔ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا اُنْذِرَ اٰبَائُهُمْ وَّ لِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْل الْمُجْرِمِيْنَ۔ قُلْ اِنِّیْ اُمِرْتُ وَاَنا اوَّلُ الْمُؤْمِنِيْن

इस इल्हाम की दृष्टि से ख़ुदा ने मुझे क़ुर्आनी ज्ञान प्रदान किए हैं और मेरा नाम अव्वलुलमोमिनीन (प्रथम मोमिन) रखा और मुझे समुद्र की भांति क़ुर्आनी सच्चाइयों और ज्ञानों से भर दिया है और मुझे बार-बार इल्हाम किया है कि इस युग में कोई ख़ुदा को पहचानने का ज्ञान (मारिफ़त) और कोई ख़ुदा से प्रेम तेरी मारिफ़त और प्रेम के समान नहीं। अत: मैं ख़ुदा की क़सम कुश्ती के मैदान में खड़ा हूँ जो व्यक्ति मुझे स्वीकार नहीं करता, शीघ्र ही वह मृत्योपरांत लज्जित होगा और अब ख़ुदा की हुज्जत के नीचे है। हे प्रिय ! कोई कार्य सांसारिक हो अथवा धार्मिक, योग्यता के अभाव में नहीं हो सकता। मुझे याद है कि एक अंग्रेज़ अधिकारी के पास एक कुलीन व्यक्ति प्रस्तुत किया गया कि उसे तहसीलदार बना दिया जाए और जिसे प्रस्तुत किया वह व्यक्ति अनपढ़ था, उर्दू भी नहीं जानता था उस अंग्रेज़ ने कहा कि यदि मैं इसे तहसीलदार बना दूँ तो इसके स्थान पर मुक़द्दमों का कौन निर्णय करेगा। मैं इसे पांच रुपए की चपरासी की नौकरी के

अतिरिक्त अन्य कोई नौकरी नहीं दे सकता। इसी प्रकार अल्लाह तआला भी फ़रमाता है - اَللّٰہُ اَعۡلَمُ حَیۡثُ یَجۡعَلُ رِسَالَتَہٗ[1]

क्या जिसके पास सहस्त्रों शत्रु और मित्र प्रश्न और ऐतिराज़ लेकर आते हैं और नुबुव्वत का प्रतिनिधित्व उसके सुपुर्द होता है। उसकी यही शान चाहिए कि केवल कुछ इल्हामी वाक्य उसकी बग़ल में हों और वे भी बिना सबूत। क्या क़ौम और विरोधी क़ौम इस से सन्तुष्ट हो सकती है। अब मैं इस लेख को समाप्त करना चाहता हूँ और यदि इसमें कोई शब्द कठोर हो तो प्रत्येक सज्जन तथा अपने मित्र मुल्हम साहिब से क्षमा माँगता हूँ क्योंकि मैंने सरासर नेक नीयत के साथ कुछ पंक्तियां लिखी हैं और मैं इस प्रिय मित्र से तन-मन से प्रेम रखता हूँ तथा दुआ करता हूँ कि ख़ुदा उनके साथ हो। इति.

ख़ाकसार - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान ज़िला-गुरदासपुर

---

①-अलअन्आम-125

मौलवी अब्दुल करीम साहिब का पत्र
एक मित्र के नाम*

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दो लिवलिय्यिही वस्सलातो वस्सलमो अला नबिय्यिही

तत्पश्चात

अब्दुल करीम की ओर से प्रिय भ्राता नसरुल्लाह ख़ान की ओर

सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू

आज मेरे हृदय में पुनः प्रेरणा हुई है कि कुछ हार्दिक पीड़ा की कहानी आपको सुनाऊँ, सम्भव है कि आप भी मेरे हमदर्द बन जाएँ। इतनी अवधि के पश्चात यह प्रेरणा हितों से ख़ाली न होगी। हृदयों का प्रेरक अपने बन्दों को व्यर्थ काम की प्रेरणा नहीं दिया करता।

चौधरी साहिब ! मैं भी मानव हूँ कमज़ोर स्त्री के पेट से निकला हूँ आवश्यक है मानव कमज़ोरी। संबंधों के आकर्षण और आर्द्रता मुझ में भी हो, स्त्री के पेट से निकला हुआ यदि अन्य रोग उसे ग्रस्त हों तो कठोर हृदय नहीं हो सकता। मेरी मां बड़ी कोमल हृदय वाली हमेशा रोग-ग्रस्त रहने वाली बुढ़िया मौजूद है, मेरा बाप भी है (हे अल्लाह उसे स्वास्थ्य दे, उसका अभिभावक हो और उसे नेकियों की सामर्थ्य प्रदान कर) मेरे प्रिय और नितान्त प्रिय भाई भी हैं और संबंध भी हैं तो फिर क्या मैं पत्थर का कलेजा रखता हूँ कि महीनों गुज़र गए, यहां धूनी रमाए बैठा हूँ या क्या मैं दीवाना हूँ और मेरी ज्ञानेन्द्रियों में विघ्न है या क्या मैं हृदय का अंधा

---

* इस पत्र पर संयोगवश मेरी दृष्टि पड़ी जिसे मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने अपने एक मित्र की ओर लिखा था। अतः मैंने एक अनुकूलता के कारण जो इसे इस पत्रिका के लेख से है प्रकाशित कर दिया। इसी से।

अनुसरणकर्ता और ख़ुदाई ज्ञानों से मात्र अनभिज्ञ हूँ या क्या मैं पापपूर्ण जीवन व्यतीत करने में अपने वंश और मुहल्ले तथा अपने शहर में प्रसिद्ध हूँ या क्या मैं दरद्रि बेघर पेट के मतलब से नित्य नए बहरूप धारण करने वाला कंगाल हूँ। अल्लाह जानता है और फ़रिश्ते साक्षी हैं कि मैं ख़ुदा की कृपा से इन समस्त दोषों से पवित्र हूँ। मैं स्वयं को पवित्र नहीं ठहराता, अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र ठहराता है।

तो फिर किस बात ने मुझ में ऐसा स्थायित्व पैदा कर रखा है जो इन समस्त सम्बन्धों पर प्रभुत्व जमा चुकी है। बहुत स्पष्ट बात और एक ही शब्द में समाप्त हो जाती है और वह है **युग के इमाम की पहचान**। अल्लाह-अल्लाह यह क्या बात है जिस में ऐसी ज़बरदस्त शक्ति है जो सारे ही सिलसिलों को तोड़-ताड़ देती है। आप भली-भांति जानते हैं कि मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार ख़ुदा की किताब के आध्यात्म ज्ञानों और रहस्यों से लाभान्तिवत हूँ और अपने घर में ख़ुदा की किताब के पढ़ने Ⓟऔर पढ़ाने के अतिरिक्त मुझे और कोई काम नहीं होता फिर मैं यहां Ⓟ33 क्या सीखता हूँ, क्या वह घर में पढ़ना और एक बहुत बड़ी जमाअत में जिसकी ओर संकेत किया जाए तथा नज़रों का केन्द्र मेरी रूह या मेरे हृदय को बहलाने के लिए पर्याप्त नहीं। कदापि नहीं। ख़ुदा की क़सम पुनः ख़ुदा की क़सम कदापि नहीं। मैं क़ुर्आन करीम पढ़ता, लोगों को सुनाता, जुमे में मिम्बर पर खड़े होकर बड़े प्रभावशाली नैतिक उपदेश देता और लोगों को ख़ुदा के प्रकोप से डराता और निषेध बातों से बचने का आग्रह करता, परन्तु मेरा हृदय मुझे हमेशा अन्दर-अन्दर भर्त्सना करता कि

لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ①

मैं दूसरों को रुलाता, परन्तु स्वयं न रोता, और लोगों को न करने वाली और अकथनीय बातों से हटाता परन्तु स्वयं न हटता। चूंकि आडम्बर पूर्ण विश्वस्त और स्वार्थी मक्कार न था और वास्तव में संसार और धन-

①-अस्सफ़-3,4

दौलत की प्राप्ति मेरे साहस का केन्द्र न था, मेरे हृदय में जब थोड़ा अकेला होता इकट्ठे होकर ये विचार आते, परन्तु चूंकि अपने सुधार के लिए कोई मार्ग सामने दिखाई न देता और ईमान ऐसे झूठे नीरस कर्मों पर सन्तुष्ट होने की अनुमति भी न देता। अन्ततः इन संघर्षों से हृदय की कमज़ोरी के सख़्त रोग में ग्रस्त हो गया। कई बार दृढ़ संकल्प किया कि पढ़ना, पढ़ाना और उपदेश देना बिल्कुल छोड़ दूं, फिर-फिर लपक-लपक कर सदाचार की किताबें, सूफ़ीवाद की किताबों और तफ़्सीरों को पढ़ता, 'इहयाउलउलूम' और अवारिफुलमआरिफ़, 'फ़ुतूहाते मक्किया' हर चारों जिल्दें और बहुत सी किताबें इसी उद्देश्य से पढ़ीं और ध्यानपूर्वक पढ़ीं और क़ुर्आन करीम तो मेरी रूह की आजीविका थी और ख़ुदा का आभार है। बचपन से और बिल्कुल नादानी की आयु से इस पवित्र महान् किताब से मुझे इतना प्रेम है कि मैं इसकी मात्रा और गुणवत्ता वर्णन नहीं कर सकता अतः ज्ञान तो बढ़ गया तथा मज्लिस को प्रसन्न करने और उपदेश को सुसज्जित करने के लिए चुटकुले और हास्यास्पद मनोरंजक बातें भी बहुत प्राप्त हो गईं और मैंने देखा कि बहुत से रोगी मेरे हाथों से स्वस्थ भी हो गए, परन्तु मुझ में कोई परिवर्तन पैदा नहीं होता था अन्ततः बड़े संघर्ष के पश्चात मुझ पर प्रकट किया गया कि जीवित आदर्श अथवा उस जीवन के झरने पर पहुँचने के अतिरिक्त जो आन्तरिक अपवित्रताओं को धो सकता हो यह मैल उतरने वाला नहीं। पूर्ण पथ-प्रदर्शन ख़ातमुलअंबिया जिन पर अल्लाह के दरूद और सलामती हो ने सहाबा को किस प्रकार साधना की श्रेणियाँ 23 वर्ष में तय कराईं। क़ुर्आन ज्ञान था और आप उस का सच्चा क्रियात्मक आदर्श थे। क़ुर्आन के आदेशों की श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा को एकांकी शब्दों ⓟ34 तथा ज्ञान रूपी रंग ने सामर्थ्य से अधिक अदभुत ⓟरंग में हृदयों पर नहीं बैठाया अपितु आंहज़रत (स.अ.व.) के क्रियात्मक आदर्शों और अद्वितीय सदाचार तथा अन्य आकाशीय समर्थनों की मित्रता और निरन्तर प्रकटन ने

आप के सेवकों के हृदयों पर ऐसा अमिट सिक्का जमाया। ख़ुदा तआला को चूंकि इस्लाम बहुत प्यारा है और उसका प्रलय तक स्थापित रहना अभीष्ट है, इसलिए उसने पसन्द नहीं किया कि वह धर्म भी संसार के अन्य धर्मों की भांति किस्सों और कहानियों का रूप लेकर पुरानी जन्तरी हो जाए। इस पवित्र धर्म में प्रत्येक युग में जीवित आदर्श विद्यमान रहे हैं जिन्होंने ज्ञान और क्रियात्मक तौर पर क़ुर्आन के लाने वाले (स.अ.व.) का युग लोगों को स्मरण कराया। इसी नियम के अनुसार हमारे युग में ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अय्यदहुल्लाहुलवुदूद को हम ने खड़ा किया कि युग पर वह एक साक्षी हो जाए। मैंने जो कुछ इस पत्र में लिखना चाहा था हज़रत अक़दस सच्चे इमाम अलैहिस्सलाम के पवित्र अस्तित्व की आवश्यकता पर कुछ अन्तर्बोधीय सबूत थे। इस मध्य कुछ प्रेरणाओं के कारण स्वयं हज़रत अक़दस ने 'ज़रूरते इमाम' पर परसों एक छोटी सी पत्रिका लिख डाली है जो शीघ्र ही प्रकाशित होगी। विवशता के कारण मैंने इस इरादे को त्याग दिया।

अन्त में मैं अपनी नेकी से भरी हुई संगतों को आपकी नियमित शुभ श्रद्धा के साथ ख़ुदा की किताब के दर्स में उपस्थित होने को आप के अपने बारे में पूर्ण सुधारणा को और उन सब पर आपके नेक दिल और पवित्र तैयारी को आपको याद दिलाता और आप की प्रकाशमान अन्तरात्मा और स्थायी स्वभाव की सेवा में अपील करता हूँ कि आप विचार करें, समय बहुत गंभीर है। जिस जीवित ईमान को क़ुर्आन चाहता है और जैसी पापों को जलाने वाली अग्नि सीनों में क़ुर्आन पैदा करना चाहता है वह कहां है। मैं महान् सिंहासन के स्वामी ख़ुदा की क़सम खाकर आप को विश्वास दिलाता हूँ कि वही ईमान रसूल (स.अ.व.) के नायब मसीह मौऊद के हाथ में हाथ देने और उस की पवित्र संगत में बैठने से प्राप्त होता है। अब शुभ कर्म में विलम्ब करने से मुझे भय है कि हृदय में कोई भयंकर परिवर्तन

उत्पन्न न हो जाए। संसार का भय त्याग दो और ख़ुदा के लिए सर्वस्व मिटा दो कि निश्चय ही सब कुछ मिल जाएगा। इति।

वस्सलाम
अब्दुल करीम
क़ादियान

1, अक्टूबर 1898 ई.

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
نحمدہ و نصلی عَلٰی رسولہ الکریم

Ⓟ35

Ⓟइन्कम टैक्स और ताज़ा निशान

صدق را ہر دم مدد آید ز ربّ العٰلمین	صادقاں را دستِ حق باشد نہاں در آستیں
ہر بلا کز آسماں بر صادقے آید فرود	آخرش گردد نشانے از برائے طالبیں

हमारे कुछ अनाड़ी शत्रु डॉक्टर क्लार्क के मुकद्दमे में अपने असफल रहने से बहुत शोकाकुल और खिन्न थे, क्योंकि उन्हें एक ऐसे मुक़द्दमे में जिसका प्रभाव इस लेखक के प्राण और सम्मान पर पड़ता था। अत्यधिक प्रयासों के बावजूद खुली पराजय का मुख देखना पड़ा और न केवल पराजय अपितु उस मुक़द्दमे के संबंध में वह इल्हामी भविष्यवाणी भी पूर्ण हुई जिसकी दो सौ से अधिक विश्वस्त और प्रतिष्ठित लोगों को सूचना दी गई थी और जिसे जन सामान्य में घटनापूर्ण भली-भांति प्रकाशित कर दिया गया था, परन्तु खेद कि उन विरोधियों की बदगुमानी और जल्दबाज़ी से उन्हें एक दूसरी पराजय भी प्राप्त हुई और वह यह कि जब कि उन दिनों में सरसरी तौर पर अदालत कि किसी नियमानुसार जांच-पड़ताल के बिना इस लेखक पर एक सौ सतासी रुपए आठ आना इन्कम टैक्स प्रस्तावित करके उस की मांग की गई तो ये लोग जिनके नाम लिखने की आवश्यकता नहीं (बुद्धिमान स्वयं ही समझ जाएँगे) अपने हृदयों में अति प्रसन्न हुए और यह विचार किया कि यदि हमारा पहला निशाना चूक गया था तो अच्छा है कि इस मुकद्दमे में इस की क्षतिपूर्ति हुई परन्तु

①-सच्चाई को हर समस्त संसारों के प्रतिपालक से सहायता पहुँचती है सदात्माओं की आस्तीन में ख़ुदा का हाथ छुपा होता है। ②-हर वह संकट जो किसी सत्यनिष्ठ पर आकाश से आता है वह अन्ततः सत्याभिलाषियों के लिए एक निशान हो जाता है। (अनुवादक)

कभी सम्भव नहीं कि अशुभचिन्तक तथा स्वार्थपरायण लोग सफल हो सकें क्योंकि कोई सफलता अपनी योजनाओं और छल-कपटों से नहीं मिल सकती अपितु एक है जो मनुष्यों के हृदयों को देखता और उनके आन्तरिक विचारों को परखता तथा उनकी नीयतों के अनुसार आकाश से आदेश करता है। अतः उसने इन अन्तर्मलिन लोगों की यह मनोकामना भी पूर्ण न होने दी और पूर्ण जांच-पड़ताल के पश्चात दिनांक 17 सितम्बर 1898 ई. इन्कम टैक्स माफ़ किया गया। इस मुक़द्दमे के अचानक ⓅPP36 पैदा हो जाने में ख़ुदा की एक यह भी नीति थी ताकि ख़ुदा का समर्थन मेरे प्राण और प्रतिष्ठा और माल के संबंध में तीनों प्रकार से तथा तीनों पहलुओं से सिद्ध हो जाए क्योंकि प्राण और प्रतिष्ठा के संबंध में तो डॉक्टर क्लार्क के मुक़द्दमे में ख़ुदाई सहायता पूर्णरूप से सिद्ध हो चुकी थी, परन्तु माल के संबंध में समर्थन का मामला अभी गुप्त था। अतः ख़ुदा तआला की कृपा और अनुकम्पा ने इरादा किया कि लोगों को माल के संबंध में भी अपना समर्थन दिखाए। अतः उसने यह समर्थन भी प्रदर्शित करके तीनों प्रकार के समर्थनों का चक्र पूर्ण कर दिया। अतः यही रहस्य है कि यह मुक़द्दमा खड़ा किया गया और जैसा कि डॉक्टर क्लार्क का मुक़द्दमा ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए खड़ा नहीं हुआ था कि मुझे तबाह और अपमानित किया जाए अपितु इसलिए खड़ा किया गया था कि उस शक्तिशाली और दयालु ख़ुदा के निशान प्रकट हों, ऐसा ही इसमें भी हुआ और जिस प्रकार मेरे ख़ुदा ने प्राण और प्रतिष्ठा के मुक़द्दमे में पहले से ही इल्हाम के द्वारा यह शुभ संदेश दिया था कि अन्त में निर्दोष घोषित किया जाएगा और शत्रु लज्जित होंगे। इसी प्रकार उसने इस मुक़द्दमे में भी पहले से ख़ुशख़बरी दी कि अन्ततः हमारी विजय होगी और ईर्ष्यालु तथा बुरी प्रकृति वाले लोग असफल रहेंगे। अतः वह इल्हामी ख़ुशख़बरी अन्तिम आदेश के जारी होने से पूर्व ही हमारी जमाअत में ख़ूब प्रचार पा चुकी थी और जैसा कि हमारी

जमाअत ने प्राण और प्रतिष्ठा के मुक़द्दमे में एक आकाशीय निशान देखा था इसमें भी उन्होंने एक आकाशीय निशान देख लिया जो उनके ईमान में वृद्धि का कारण हुआ। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा और आभार।

मुझे नितान्त आश्चर्य है कि इसके बावजूद कि निशान पर निशान प्रकट होते जाते हैं परन्तु मौलवियों का सच्चाई स्वीकार करने की ओर ध्यान नहीं। वे यह भी नहीं देखते कि ख़ुदा तआला उन्हें प्रत्येक मैदान में पराजित करता है और वे नितान्त अभिलाषी हैं कि किसी प्रकार का ख़ुदाई समर्थन उनके संबंध में भी सिद्ध हो, परन्तु समर्थन के स्थान पर दिन-प्रतिदिन उनका लज्जित और असफल होना सिद्ध होता जाता है। उदाहरणत: जिन दिनों में जंतरियों द्वारा यह प्रसिद्ध हुआ था कि इस बार के रमज़ान माह में सूर्य और चन्द्रमा दोनों को ग्रहण लगेंगे और लोगों के हृदयों में यह विचार पैदा हुआ था कि यह वादा दिए गए इमाम के प्रकट होने का निशान है तो उस समय मौलवियों के हृदयों में यह भय व्याप्त हो गया था कि Ⓟमहदी और मसीह होने का दावेदार तो यही एक व्यक्ति Ⓟ17 मैदान में खड़ा है, ऐसा न हो कि लोग इसकी ओर झुक जाएँ। अत: इस निशान को छुपाने के लिए प्रथम तो कुछ ने यह कहना आरम्भ किया कि इस रमज़ान में सूर्य और चन्द्र-ग्रहण कदापि नहीं होगा अपितु उस समय होगा जब उनके इमाम महदी प्रकट होंगे और जब रमज़ान में सूर्य और चन्द्र-ग्रहण हो चुका तो फिर यह बहाना प्रस्तुत किया कि ये सूर्य और चन्द्र-ग्रहण हदीस के शब्दों के अनुकूल नहीं क्योंकि हदीस में यह है कि चन्द्रमा को प्रथम रात में ग्रहण लगेगा और सूर्य को बीच की तिथि में ग्रहण लगेगा, हांलाकि इस सूर्य और चन्द्र-ग्रहण में चन्द्रमा को तेरहवीं रात में ग्रहण लगा और सूर्य को अट्ठाईसवीं तारीख़ को लगा। जब उन्हें समझाया गया कि हदीस में महीने की पहली तारीख़ अभिप्राय नहीं और पहली तारीख़ के चन्द्रमा को क़मर नहीं कह सकते, उसका नाम तो 'हिलाल'

है और हदीस में क़मर का शब्द है न कि 'हिलाल' का। अतः हदीस के अर्थ ये हैं कि चन्द्रमा को उस पहली रात में ग्रहण लगेगा जो उसकी ग्रहण की रातों में से पहली रात है अर्थात महीने की तेरहवीं रात और सूर्य को बीच के दिन में ग्रहण लगेगा अर्थात् अट्ठाईसवीं तारीख़ जो उसके ग्रहण के निर्धारित दिनों में से बीच का दिन है।*

तब यह अनाड़ी मौलवी इस सही अर्थ को सुनकर बहुत लज्जित हुए और फिर बड़े परिश्रम से यह दूसरा बहाना बनाया कि हदीस के वर्णनकर्ताओं में से एक वर्णनकर्ता अच्छा व्यक्ति नहीं है। तब उन्हें कहा गया कि जब कि हदीस की भविष्यवाणी पूर्ण हो गई तो वह प्रतिप्रश्न (जिरह) जिस का आधार सन्देह पर है इस निश्चित घटना की तुलना में जो हदीस के सही होने पर एक ठोस सबूत है कुछ वस्तु ही नहीं अर्थात भविष्यवाणी का पूर्ण होना यह साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा है कि यह सच्चे का कलाम है। अतः यह कहना कि वह सच्चा नहीं अपितु झूठा है स्पष्ट आदेशों का इन्कार है। मुहद्दिसीन का सदैव से यही सिद्धान्त है कि वे कहते हैं कि सन्देह यक़ीन को अलग नहीं कर सकता। भविष्यवाणी का अपने अर्थ के अनुसार एक महदी के दावेदार के युग में पूर्ण हो जाना इस बात पर निश्चित साक्ष्य है कि जिसके मुख से ये वाक्य निकले थे उसने सत्य बोला है परन्तु यह कहना कि उसके चाल-चलन Ⓟमें हमें आपत्ति है यह

Ⓟ38

* यह प्रकृति का नियम है कि चन्द्र-ग्रहण के लिए महीने की तीन रातें निर्धारित हैं अर्थात् तेरहवीं(13), चौदहवीं(14) , पंद्रहवीं(15)। चन्द्र-ग्रहण सदैव इन तीन रातों में से किसी एक में लगता है। अतः इस हिसाब से चन्द्र-ग्रहण की पहली रात तेरहवीं रात है जिसकी ओर हदीस का संकेत है और सूर्य-ग्रहण के दिन महीने की सत्ताईस्वीं (27), अट्ठाईसवीं (28) और उन्तीसवीं(29) तारीख़ है। अतः इस हिसाब से सूर्य-ग्रहण का बीच का दिन अट्ठाईसवां है और ग्रहण उन्हीं तारीख़ों में लगा। इसी से।

एक संदेहास्पद बात है और कभी झूठा भी सच बोलता है। इसके अतिरिक्त यह भविष्यवाणी अन्य ढंगों से भी सिद्ध है। हनफ़ियों के कुछ बुज़ुर्गों ने भी इसे लिखा है तो फिर इन्कार न्याय की शर्त नहीं है अपितु सरासर हठधर्मी है और इस मुँह तोड़ उत्तर के पश्चात उन्हें यह कहना पड़ा कि यह हदीस तो सही है और इस से यही समझा जाता है कि शीघ्र ही कथित इमाम प्रकट होगा, परन्तु यह व्यक्ति कथित इमाम नहीं है अपितु वह और होगा जो इसके पश्चात शीघ्र प्रकट होगा, परन्तु उनका यह उत्तर भी फुसफुसा और ग़लत सिद्ध हुआ, क्योंकि यदि कोई और इमाम होता तो जैसा कि हदीस का अर्थ है वह इमाम सदी के सर पर आना चाहिए था, परन्तु सदी से भी पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो गए और उनका कोई इमाम प्रकट न हुआ। अब इन लोगों की ओर से अन्तिम उत्तर यह है कि ये लोग काफ़िर हैं, इनकी पुस्तकें मत देखो, इन से मेल-जोल न रखो, इनकी बात मत सुनो कि इनकी बातें हृदय को प्रभावित करती हैं, परन्तु यह कितना भयभीत करने वाला स्थान है कि आकाश भी उनका विरोधी हो गया और पृथ्वी की वर्तमान अवस्था भी विरोधी हो गई। यह उनका कितना अपमान है कि एक ओर आकाश उनके विपरीत साक्ष्य दे रहा है तथा दूसरी ओर पृथ्वी सलीबी प्रभुत्व के कारण साक्ष्य दे रही है आकाश की साक्ष्य 'दारक़ुत्नी' इत्यादि पुस्तकों में उपलब्ध है अर्थात् रमज़ान में सूर्य और चन्द्र-ग्रहण और पृथ्वी की साक्ष्य सलीबी प्रभुत्व है जिसके प्रभुत्व में मसीह मौऊद का आना आवश्यक था और जैसा कि सही बुख़ारी में यह हदीस मौजूद है। ये दोनों गवाहियां हमारी समर्थक तथा उनको झूठा सिद्ध करने वाली हैं। फिर लेखराम की मौत का जो निशान प्रकट हुआ उसने भी उनको कुछ कम लज्जित नहीं किया। इसी प्रकार महोत्सव अधिवेशन अर्थात् समस्त जातियों का धार्मिक जलसा जिसमें हमारा लेख विजयी रहा अपितु यह घटना समय से पूर्व इल्हाम होकर विज्ञापनों द्वारा प्रकाशित कर दी गई। काश यदि आथम ही

जीवित रहता तो मियां मुहम्मद हुसैन बटालवी तथा उसके सहपंथियों के हाथ में झूठी व्याख्याओं की कुछ गुंजाइश रहती, परन्तु आथम भी शीघ्र मर कर इन लोगों को बर्बाद कर गया। जब तक वह चुप रहा जीवित रहा और फिर मुँह खोलते ही इल्हामी शर्त ने उसे ले लिया। ⓟख़ुदा तआला ने इल्हामी शर्त के अनुसार उसे आयु दी और जब से कि उसने झूठा कहना आरम्भ किया उसी समय से कठोर विपत्तियों ने उसे ऐसा पकड़ लिया कि उसके जीवन का अतिशीघ्र अन्त कर दिया परन्तु चूंकि यह अपमान कुछ अज्ञान मौलवियों को महसूस नहीं हुआ था और शर्त वाली भविष्यवाणी को उन्होंने मात्र उद्दण्डता से यों देखा कि जैसे उसके साथ कोई भी शर्त न थी। आथम की उद्विग्नता और मुख बन्द जीवन से जो भविष्यवाणी के दिनों में स्पष्ट तौर पर रही, उन्होंने ईमानदारी से कोई निष्कर्ष न निकाला और आथम को जो क़सम के लिए बुलाया गया और मुक़द्दमे के लिए प्रोत्साहित किया गया और वह इन्कार करते हुए कानों को हाथ लगाता रहा, इन समस्त बातों से उनको कोई मार्ग-दर्शन प्राप्त न हुआ। इसलिए ख़ुदा ने जो अपने निशानों को सन्देह में छोड़ना नहीं चाहता, लेखराम की भविष्यवाणी को जिसके साथ कोई शर्त न थी और जिसमें तारीख़ और दिन और मृत्यु का रूप अर्थात् किस ढंग से मरेगा सब वर्णन किया गया था समझाने के अन्तिम प्रयास के लिए पूर्ण स्पष्टता के साथ पूर्ण किया परन्तु खेद कि सत्य के विरोधियों ने ख़ुदा तआला के इस खुले-खुले निशान से भी कोई लाभ न उठाया। स्पष्ट है कि यदि मैं झूठा होता तो लेखराम की भविष्यवाणी मुझे अपमानित करने के लिए बड़ा उत्तम अवसर था क्योंकि उसके साथ ही मैंने अपना इक़रार लिखकर प्रकाशित कर दिया था कि यदि यह भविष्यवाणी झूठी निकली तो मैं झूठा हूँ और प्रत्येक दण्ड और अपमान का पात्र हूँ। अत: यदि मैं झूठा होता तो ऐसे अवसर पर जब कि क़समें खाकर यह भविष्यवाणी जो कोई भी शर्त नहीं रखती थी प्रकाशित

की गई थी आवश्यक था कि ख़ुदा तआला मुझे अपमानित करता तथा मेरा और मेरी जमाअत का नाम और निशान मिटा देता, परन्तु ख़ुदा तआला ने ऐसा न किया अपितु इसमें मेरा सम्मान प्रकट किया और जिन लोगों ने अज्ञानता से आथम के संबंध में की गई भविष्यवाणी को नहीं समझा था उनके हृदयों में भी इस भविष्यवाणी से प्रकाश डाला। क्या यह विचार करने का स्थान नहीं है कि ऐसी भविष्यवाणी में जिसके साथ कोई भी शर्त नहीं थी और जिसके ग़लत सिद्ध होने से मेरी पूरी नौका डूबती थी ख़ुदा ने क्यों मेरा समर्थन किया और क्यों उसे पूर्ण करके सैकड़ों हृदयों में मेरा प्रेम डाल दिया, यहां तक कि कुछ कट्टर शत्रुओं ने रोते हुए आकर बैअत की। यदि यह भविष्यवाणी पूर्ण न होती तो मियां बटालवी साहिब स्वयं विचार कर लें कि वह किस धूम-धाम से इशाअतुस्सुन्नः Ⓟमें झूठा Ⓟ40 सिद्ध करने के लिए लिखते और संसार पर उनका क्या कुछ प्रभाव होता, क्या कोई सोच सकता है कि ख़ुदा ने ऐसे अवसर पर क्यों बटालवी और उन के विचारों से सहमत लोगों को लज्जित और अपमानित किया। क्या क़ुर्आन में नहीं है कि ख़ुदा लिख चुका है कि वह मोमिनों को विजयी करता है। क्या यदि यह भविष्यवाणी जो लेशमात्र भी शर्त अपने साथ नहीं रखती थी और एक भारी विरोधी के पक्ष में थी जो मुझ पर दांत पीसता था झूठी निकली तो क्या इस स्पष्ट निर्णय के पश्चात मेरा कुछ शेष रह जाता, और क्या यह उचित नहीं कि इस भविष्यवाणी के झूठे निकलने पर शैख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी को हज़ार ईद की प्रसन्नता होती और वह भांति-भांति के उपहास और ठट्ठों द्वारा अपने कलाम को सुसज्जित करके पत्रिका को निकालता और कई जलसे करता परन्तु अब भविष्यवाणी के सच्चे निकलने पर उसने क्या किया। क्या यह सत्य नहीं कि उसने ख़ुदा के एक महान् कार्य को एक रद्दी वस्तु की भांति फेंक दिया और अपनी अशुभ पत्रिका में यह संकेत किया कि लेखराम का हत्यारा यही व्यक्ति

है। अत: मैं कहता हूं कि मैं किसी मानव-प्रहार के साथ हत्यारा नहीं हाँ आकाशीय प्रहार के साथ अर्थात् दुआ के साथ हत्यारा हूँ और वह भी उसकी विनती और आग्रह के पश्चात। मैंने नहीं चाहा कि उस पर बद दुआ (अभिशाप) करूँ, परन्तु उसने स्वयं चाहा। अत: मैं उसका इसी प्रकार हत्यारा हूँ जिस प्रकार कि हमारे नबी (स.अ.व.) ख़ुसरो परवेज़ ईरान के बादशाह के हत्यारे थे। अत: लेखराम का मुक़द्दमा मुहम्मद हुसैन पर ख़ुदा तआला के समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर गया और इसी प्रकार उसके अन्य भाइयों पर। तत्पश्चात डॉक्टर क्लार्क के मुक़द्दमे में ख़ुदा का निशान प्रकट हुआ और वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो अन्तिम आदेश से पूर्व सैकड़ों लोगों में फैल चुकी थी। इस मुकद्दमे में शैख़ बटालवी को उस अपमान से दोचार होना पड़ा कि यदि भाग्य साथ देता तो अविलम्ब सच्ची तौबा (पश्चाताप) करता। उस पर भली-भांति स्पष्ट हो गया कि ख़ुदा ने किस का समर्थन किया।

स्मरण रहे कि क्लार्क के मुकद्दमे में मुहम्मद हुसैन ने ईसाइयों के साथ सम्मिलित होकर मेरे विनाश के लिए एडी-चोटी का ज़ोर लगाया था और मुझे अपमानित करने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी थी। अन्तत: मेरे ख़ुदा ने मुझे बरी किया और भरी कचहरी में कुर्सी मांगने पर ⓟउसको वह अपमान झेलना पड़ा जिस से एक सुशील व्यक्ति लज्जा के कारण मर सकता है। यह एक सदात्मा को अपमानित करने की अभिलाषा का परिणाम है। कुर्सी की विनती पर उसे डिप्टी कमिश्नर बहादुर ने झिड़कियां दीं और कहा कि कुर्सी न कभी तुझे मिली और न तेरे बाप को, और झिड़क कर पीछे हटाया और कहा कि सीधा खड़ा हो जा। उस पर मौत पर मौत यह हुई कि उन झिड़कियों के समय यह ख़ाकसार डिप्टी कमिश्नर के निकट ही कुर्सी पर बैठा हुआ था जिस का अपमान देखने के लिए वह आया था। मुझे कुछ आवश्यकता नहीं कि इस घटना को बार-बार लिखूँ।

ⓟ41

कचहरी के अफ़सर मौजूद हैं उनका स्टाफ़ मौजूद है उनसे पूछने वाले पूछ लें। अब प्रश्न तो यह है कि ख़ुदा तआला का क़ुर्आन करीम में वादा है कि वह मोमिनों का समर्थन करता है और उन्हें सम्मान प्रदान करता है तथा झूठों और दज्जालों को अपमानित करता है फिर यह उल्टी गंगा क्यों बहने लगी कि प्रत्येक मैदान में मुहम्मद हुसैन को ही अपमान और अपयश प्राप्त होता गया। क्या ख़ुदा तआला का अपने प्रियजनों से यही स्वभाव है।

अब टैक्स के मुक़द्दमे में शैख़ बटालवी साहिब की ख़ुशी यह थी कि किसी प्रकार टैक्स लग जाए ताकि इसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर इशाअतुस्सुन्नह को सुसज्जित करें ताकि इस से पूर्व के अपमानों पर किसी सीमा तक पर्दा पड़ सके। अतः इस में भी वह असफल रहा और स्पष्ट तौर पर टैक्स माफ़ करने का आदेश आ गया। ख़ुदा ने इस मुकद्दमे को ऐसे अधिकारियों के हाथ में दिया जिन्होंने सच्चाई और ईमानदारी से न्याय को पूर्ण करना था। अतः अभागे, अशुभचिन्तक इस प्रहार में भी असफल ही रहे। ख़ुदा तआला का हज़ार-हज़ार आभार कि उसने न्यायवान अधिकारियों पर मूल वास्तविकता स्पष्ट कर दी। यहां हमें जनाब टी. डिक्सन साहिब डिप्टी कमिश्नर ज़िला गुरदासपुर का कृतज्ञ होना चाहिए जिनके हृदय पर ख़ुदा तआला ने मूल वास्तविकता प्रकट कर दी। इसी कारण हम प्रारम्भ से अंग्रेज़ी सरकार और अंग्रेज़ी अधिकारियों के कृतज्ञ और प्रशंसक हैं कि वे न्याय को बहरहाल प्राथमिकता देते हैं। कप्तान डगलस साहिब पूर्व कमिश्नर ने डाक्टर क्लार्क के फौजदारी मुकद्दमे में और मिस्टर टी.डिक्सन साहिब ने इस इन्कम टैक्स के मुकद्दमे में हमें अंग्रेज़ी अदालत और न्याय-प्रियता के दो ऐसे आदर्श दिए हैं जिन्हें हम जीवन पर्यन्त Ⓟकभी नहीं भूल सकते, क्योंकि कप्तान डगलस साहिब के सामने वह गंभीर मुकद्दमा आया था जिसका वादी सदस्य एक ईसाई था और जिसके समर्थन में मानो पंजाब के समस्त पादरी थे, परन्तु मान्यवर ने इस बात की तनिक परवाह न की

Ⓟ42

कि यह मुक़द्दमा किस वर्ग की ओर से है तथा पूर्णतया न्याय से काम लिया और मुझे बरी किया और जो मुक़द्दमा अब मिस्टर टी.डिक्सन साहिब के अधीन आया यह भी गंभीर था क्योंकि टैक्स की माफ़ी में सरकार की हानि है। अतः उपरोक्त साहिब ने सरासर इन्साफ और न्याय-प्रियता और मात्र न्याय से काम लिया। मेरे विचार में इस प्रकार के सरकारी अधिकारी प्रजा की भलाई, नेक नीयती और न्याय संगत सिद्धान्तों के प्रकाशमान नमूने हैं और वास्तविकता यही थी कि सत्य तक मिस्टर टी.डिक्सन साहिब का विवेक पहुँच गया। अतः हम धन्यवाद भी करते हैं और दुआ भी। यहां मुन्शी ताजुद्दीन साहिब तहसीलदार परगना-बटाला का परिश्रम और जांच-पड़ताल वर्णन योग्य है जिन्होंने न्याय और सत्य को अभीष्ट रखकर सही घटनाओं को उच्च अधिकारियों को दर्पण की भांति दिखा दिया और इस प्रकार सही तौर पर वास्तविकता तक पहुँचने के लिए उच्चाधिकारियों की सहायता की। अब वह मुक़द्दमा अर्थात् तहसीलदार साहिब की राय और डिप्टी कमिश्नर साहिब का अन्तिम आदेश निम्नलिखित है -

नक़ल रिपोर्ट मुन्शी ताजुद्दीन साहिब तहसीलदार परगना बटाला, ज़िला गुरदासपुर मुक़द्दमा उज्रदारी टैक्स के सन्दर्भ में मिस्टर टी.डिक्सन डिप्टी कमिश्नर बहादुर की अदालत पर आधारित मिसल

लौटाने की तिथि	निर्णय न्यायालय के रजिस्टर	नम्बर मुक़द्दमा
20, जून 1998 ई.	17, दिसम्बर 1998 ई.	55/46

मिसल इन्कमटैक्स से संबंधित आपत्ति

बनाम

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पुत्र श्री ग़ुलाम मुर्तज़ा क़ौम मुग़ल

निवासी - क़ादियान, तहसील बटाला, ज़िला गुरदासपुर

सेवा में

महोदय, डिप्टी कमिश्नर बहादुर ज़िला गुरदासपुर

जनाब आली मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी पर इस वर्ष एक सौ सतासी रुपए आठ आने इन्कम टैक्स निर्धारित किया गया। इस से पूर्व मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पर कभी टैक्स निर्धारित नहीं हुआ। चूंकि यह टैक्स नया लगाया गया था, मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने इस पर आप की अदालत में आपत्ति प्रस्तुत की है जो इस विभाग द्वारा जांच-पड़ताल के लिए सुपुर्द होने के आधार पर है। इसके पूर्व इन्कम टैक्स के सन्दर्भ में जितनी जांच-पड़ताल की गई है उसका वर्णन करना उचित मालूम होता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के बारे में हुज़ूर के समक्ष कुछ चर्चा की जाए ताकि ज्ञात हो कि आपत्तिकर्ता कौन है और किस हैसियत का व्यक्ति है। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद एक पुराने प्रतिष्ठित मुग़ल ख़ानदान में से हैं जो क़स्बा क़ादियान में एक अरसे से निवास रखते हैं। इसका पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा एक सम्मानित ज़मींदार था और क़ादियान का रईस था। उसने अपनी मृत्यु पर एक उचित सम्पत्ति छोड़ी। उसमें से कुछ सम्पत्ति तो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के पास अब भी है और कुछ मिर्ज़ा सुल्तान अहमद पुत्र मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के पास है जो उसे स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर की पत्नी के माध्यम से मिली है। यह सम्पत्ति अधिकांश खेती, उदाहरणतः बाग़, ज़मीन और कुछ देहात की ताल्लुक़ादारी है और चूंकि मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा एक सम्माननीय रईस आदमी था सम्भव है और मेरी राय में निश्चित है कि उसने बहुत सी नक़दी और आभूषण भी छोड़े हों, परन्तु ऐसी चल सम्पत्ति के संबंध में सन्तोषजनक साक्ष्य नहीं गुज़री। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद प्रारम्भिक दिनों में स्वयं नौकरी करता रहा है और उसकी कार्य पद्धति सदैव से ऐसी रही है कि उस से आशा नहीं हो सकती कि

उसने अपनी आय या अपने पिता की सम्पत्ति नक़दी और आभूषणों को नष्ट किया हो। जो अचल सम्पत्ति उसे पिता से विरसे में पहुँची है वह तो अब भी मौजूद है, परन्तु चल सम्पत्ति के सन्दर्भ में पर्याप्त साक्ष्य नहीं मिल सकी परन्तु बहरहाल मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की परिस्थितियों की दृष्टि से यह संतोषपूर्वक कहा जा सकता है कि वह भी उस ने नष्ट नहीं की। कुछ समय से मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने नौकरी इत्यादि त्याग कर अपने धर्म की ओर ध्यान किया और इस बात का हमेशा से प्रयास करता रहा कि वह एक धार्मिक प्रमुख माना जाए। उसने कुछ धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित कीं, पत्रिकाएं लिखीं तथा अपने विचारों का प्रकटन विज्ञापनों के माध्यम से किया। अत: इस कुल कार्यवाही का परिणाम यह हुआ कि कुछ समय से बहुत से लोगों का एक समूह जिनकी सूची (अंग्रेज़ी शब्दों में) संलग्न है इसे अपने दल का सरदार मानने लग गया और एक पृथक सम्प्रदाय के तौर पर स्थापित हो गया। इस सम्प्रदाय में संलग्न सूची के अनुसार 318 लोग हैं, जिनमें नि:सन्देह कुछ लोग जिनकी संख्या अधिक नहीं सम्मानित और विद्वान हैं। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का सम्प्रदाय जब कुछ अधिक होने लगा तो उस ने अपनी पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' और 'तौज़ीहे मराम' में अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपने अनुयायियों से चन्दे का निवेदन किया और उनमें पांच खातों की चर्चा की जिन के लिए चन्दे की आवश्यकता है। चूंकि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पर उसके अनुयायियों का विश्वास हो गया। अत: शनै:-शनै: उन्होंने चन्दा भेजना आरम्भ किया और अपने पत्रों में कई बार तो विशेष्य कर दिया कि उनका चन्दा इन पांच खातों में से अमुक खाते में सम्मिलित किया जाए और कई बार मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की राय पर छोड़ दिया कि जिस मद में वह आवश्यक समझें व्यय करें। अत: मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद आपत्तिकर्ता के बयान के अनुसार तथा चन्दे के गवाहों की साक्ष्य के अनुसार रुपए का हाल इसी

प्रकार होता है। अतः यह सम्प्रदाय इस समय एक धार्मिक सोसायटी के बतौर है जिसका सरदार मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद है और शेष सब अनुयायी हैं तथा परस्पर चन्दे से सोसायटी के उद्देश्यों को उचित तौर पर पूर्ण करते हैं। जिन पांच मदों की ऊपर चर्चा की गई है वे निम्नलिखित हैं -

प्रथम - मेहमान ख़ाना - जितने लोग मिर्ज़ा साहिब के पास क़ादियान में आते हैं चाहे वे अनुयायी हों या न हों, परन्तु वह धार्मिक जांच पड़ताल के लिए आए हों उन्हें वहाँ से भोजन मिलता है और लिखित बयान अधिकृत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद इस मद के चन्दे में से यात्रियों, अनाथों और विधवाओं की भी सहायता की जाती है।

द्वितीय - प्रेस - इसमें धार्मिक पुस्तकें और विज्ञापन छापे जाते हैं और कई बार लोगों में मुफ़्त बांटे जाते हैं।

तृतीय - मदरसा - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के अनुयायियों की ओर से एक मदरसा स्थापित किया गया है, परन्तु उसकी अभी प्रारम्भिक अवस्था है और उसका प्रबंध मौलवी नूरुद्दीन के सुपुर्द है जो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का एक विशेष अनुयायी है।

चतुर्थ - जलसा सालाना तथा अन्य ख़र्चे। इस सम्प्रदाय के सालाना जल्से भी होते हैं और इन जल्सों को सम्पन्न करने के लिए चन्दा एकत्र किया जाता है।

पंचम -पत्राचार - अधिकृत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के लिखित बयान तथा गवाहों की साक्ष्य, इसमें बहुत सा रुपया व्यय होता है। धार्मिक जानकारियों के संबंध में जितना पत्राचार होता है उसके लिए अनुयायियों से चन्दा लिया जाता है। अतः गवाहों के बयान के अनुसार इन कथित पांच मदों में चन्दे की राशि व्यय होती है और इन साधनों से मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अपने अनुयायियों सहित अपने धार्मिक विचारों का प्रचार करता है। यह सोसायटी एक धार्मिक सम्प्रदाय है और चूंकि हुज़ूर को इस

सम्प्रदाय के संबंध में पहले से ज्ञान है। इसलिए इस संक्षिप्त रूप-रेखा को पर्याप्त समझा जाता है और अब मूल आपत्ति के प्रार्थना पत्र के सन्दर्भ में निवेदन किया जाता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पर इस वर्ष 7200 रुपए उसकी वार्षिक आय निर्धारित करके एक सौ सतासी रुपए आठ आना आयकर निर्धारित किया गया। उस की आपत्ति पर उसका अपना बयान विशेष मौज़ा क़ादियान में जब कि यह ख़ाकसार दौरे के लिए उस ओर गया तथा तेरह लोगों की साक्ष्य लिखी गई। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने अपने हल्फ़ी बयान में लिखवाया कि उसे ताल्लुक़ादारी ज़मीन और बाग़ की आय है। ताल्लुक़ादारी की वार्षिक आय लगभग ब्यासी रुपए 10 आना, ज़मीन की लगभग तीन सौ रुपया वार्षिक और बाग़ की लगभग दो सौ, तीन सौ, चार सौ और अधिक से अधिक पांच सौ रुपए की आय होती है। इसके अतिरिक्त उसे किसी प्रकार की अन्य आय नहीं है। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने यह भी बयान किया कि उसे लगभग पांच हज़ार दो सौ रुपया वार्षिक अनुयायियों से इस वर्ष पहुँचा है अन्यथा औसत वार्षिक आय लगभग चार हज़ार रुपये होती है। इन पांच मदों में जिनका ऊपर वर्णन किया है व्यय होती है और उसके व्यक्तिगत व्यय में नहीं आती। आय और व्यय का हिसाब नियमानुसार कोई नहीं है केवल याददाश्त से अनुमान लगा कर लिखवाया गया है। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने यह भी बयान किया कि उसकी व्यक्तिगत आय बाग़, ज़मीन और ताल्लुक़दारी की उसके ख़र्च के लिए पर्याप्त है और उसे कुछ आवश्यकता नहीं है कि वह अनुयायियों का रुपया व्यक्तिगत ख़र्च में लाए। गवाहों की साक्ष्य भी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के बयान का समर्थन करती है और बयान किया जाता है कि अनुयायी बतौर दान कथित पांच मदों के लिए मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद को रुपया भेजते हैं और उन्हीं मदों में व्यय होता है। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की अपनी व्यक्तिगत आय ताल्लुक़ादारी, ज़मीन और बाग़ के और नहीं है

जो टैक्स योग्य हो। गवाहों में से छ: गवाह यद्यपि विश्वस्त लोग हैं परन्तु मिर्ज़ा साहिब के अनुयायी हैं और अधिकांश मिर्ज़ा साहिब के पास रहते हैं, अन्य सात गवाह भिन्न-भिन्न प्रकार के दूकानदार हैं जिन का मिर्ज़ा साहिब से कोई संबंध नहीं है। सामान्य तौर पर ये सब गवाह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के बयान का समर्थन करते हैं और उसकी व्यक्तिगत आय सिवाय ताल्लुक़ादारी ज़मीन और बाग़ के और किसी प्रकार की नहीं बताते। मैंने मौक़े पर भी गुप्त तौर से मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की व्यक्तिगत आय के बारे में कुछ लोगों से पूछा, परन्तु यद्यपि कुछ लोगों से ज्ञात हुआ कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की व्यक्तिगत आय बहुत है और वह टैक्स योग्य है, परन्तु कहीं से कोई स्पष्ट सबूत मिर्ज़ा साहिब की आय का न मिल सका। मौखिक बातें पाई गईं। कोई व्यक्ति पूरा-पूरा सबूत न दे सका। मैंने मौज़ा क़ादियान में मदरसा और मेहमान ख़ाना का भी अवलोकन किया। मदरसा अभी प्रारम्भिक अवस्था में है और अधिकांश कच्ची इमारत में बना हुआ है और कुछ अनुयायियों के लिए घर भी बने हुए हैं, परन्तु मेहमान ख़ाना में नि:संदेह मेहमान पाए गए और यह भी देखा गया कि उस दिन जितने अनुयायी मौजूद थे उन्होंने मेहमान ख़ाना से भोजन खाया।

ख़ाकसार के तुच्छ विचार में यदि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की व्यक्तिगत आय केवल ताल्लुक़ादारी और बाग़ की स्वीकार की जाए जैसा कि गवाही से स्पष्ट हुआ और जितनी आय मिर्ज़ा साहिब को अनुयायियों से प्राप्त होती है उसे दान का रुपया माना जाए जैसा कि गवाहों ने सामान्य तौर पर बयान किया तो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पर वर्तमान आयकर स्थापित नहीं रह सकता, परन्तु जब कि दूसरी ओर यह विचार किया जाता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद एक प्रतिष्ठित और बड़े ख़ानदान से है और उसके पूर्वज रईस रहे हैं और उनकी आय उचित रही है और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद स्वयं कर्मचारी रहा है और समृद्ध रहा है तो अवश्य विचार आता है कि

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद एक धनवान व्यक्ति है और आयकर योग्य है। मिर्ज़ा साहिब के अपने बयान के अनुसार अभी ही उसने अपना बाग़ अपनी पत्नी के पास धरोहर रखकर उस से चार हज़ार रुपए के आभूषण और एक हज़ार रुपया नक़द वुसूल पाया है, तो जिस व्यक्ति की पत्नी इतना रुपया दे सकती है। उसके बारे में अवश्य विचार पैदा होता है कि वह धनवान होगा। ख़ाकसार ने जितनी जांच-पड़ताल की है वह मिसल के साथ संलग्न है और हुज़ूर के आदेशानुसार यह रिपोर्ट आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

दिनांक - 31, अगस्त 1898 ई.

ख़ाकसार - ताजुद्दीन तहसीलदार बटाला।

पुनः यह कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के अधिकृत वकील को हुज़ूर की अदालत में उपस्थित होने के लिए 3, सितम्बर 1898 ई. की तिथि दी गई है।

लेख दिनांक सदर हस्ताक्षर न्यायकर्ता

नक़ल अन्तरिम आदेश आय कर आपत्ति विभाग अदालत टी.डिक्सन साहिब डिप्टी कमिश्नर बहादुर गुरदासपुर मिसल आपत्ति आयकर बनाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पुत्र ग़ुलाम मुर्तज़ा क़ौम मुग़ल निवासी क़स्बा क़ादियान, तहसील-बटाला, ज़िला-गुरदासपुर आज ये दस्तावेज़ प्रस्तुत होकर तहसीलदार साहिब की रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। अभी यह मिसल प्रस्ताव के अन्तर्गत रहे। निर्धारण शैख़ अली अहमद वकील और आपत्तिकर्ता के अधिकृत उपस्थित हैं उन्हें सूचना दी गई।

दिनांक 3-9-1898

हस्ताक्षर न्यायाधीश

नकल अनुवाद अन्तिम आदेश आपत्ति आयकर विभाग अदालत मिस्टर टी. डिक्सन साहिब डिप्टी कमिश्नर, ज़िला गुरदासपुर

आदेश का अनुवाद

यह नया आयकर निर्धारित किया गया है और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का दावा है कि उसकी समस्त आय व्यक्तिगत कामों में व्यय नहीं होती अपितु इस सम्प्रदाय के कामों पर व्यय होती है जिसे उसने स्थापित किया है। वह स्वीकार करता है कि उसके पास और सम्पत्ति भी है, परन्तु उसने तहसीलदार के समक्ष बयान किया कि वह आय भी कि जो ज़मीन और खेती से है वहा धारा 5 (B) के अन्तर्गत करमुक्त है धार्मिक कार्यों में व्यय होती है। हमें उस व्यक्ति की नेक नीयत पर सन्देह करने का कोई कारण विदित नहीं होता और हम उसकी आय को जिसे वह 5300 चन्दे की राशि बयान करता है माफ़ करते हैं क्योंकि धारा 5 (E) के अन्तर्गत वह मात्र धार्मिक उद्देश्यों के लिए व्यय की जाती है। अत: आदेश हुआ कि इन दस्तावेज़ों की नियमानुसार कार्यवाही होकर इन्हें कार्यालय में दाख़िल कर दिया जाए। लेख 17-9-1898 ई.

स्थान डलहौज़ी

हस्ताक्षर न्यायाधीश

In the Court of F.T. Dixon Esquire Collector of the District of Gurdaspur.

Income Tax objection case No. 46 of 1898.

Mirza Ghulam Ahmad son of Mirza Ghulam Murtaza, caste Mughal, resident of mauzah Qadian Mughlan, Tahsil Batala, Distt. of Gurdaspur objector

ORDER

This tax is a newly imposed one and Mirza Ghulam Ahmad claims that all his income is applied not to his personal but to the expenses of sect he has founded. He admits that he has other property but he stated to the Tahsildar that even the proceeds of that which is classed as land and the proceeds of agriculture and is exempt under 5 (b) go to his religious expenses. I see no reason to doubt the bona fides of this man, whose sect is well known, and I exempt his income from subscriptions which he states as 5200/- Under Sec 5 (c) as being solely employed in religious purposes.

Sd/T. Dixon

17-9-1898 Collector

अनुवाद

अदालत टी.डिक्सन साहिब बहादुर कलक्टर

ज़िला गुरदासपुर

मुक़द्दमा नं.46, 1898 ई. आयकर आपत्ति के संदर्भ में

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पुत्र मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा क़ौम मुग़ल निवासी क़स्बा क़ादियान मुग़लां, तहसील-बटाला ज़िला गुरदासपुर - आपत्तिकर्ता

आदेश

यह कर इसी बार लगाया गया है और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब बयान करते हैं कि यह समस्त आय मेरी जमाअत के लिए व्यय होती है, मेरे व्यक्तिगत ख़र्च में नहीं आती। वह इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि मेरी और भी सम्पत्ति है परन्तु तहसीलदार साहिब के समक्ष उन्होंने बयान किया है कि मेरी इस सम्पत्ति की आय भी जो ज़मीन से है तथा खेती की पैदावार है तथा धारा 5(B) आयकर से मुक्त है धार्मिक कार्यों में ही काम आती है। इस व्यक्ति की नेक नीयत के प्रकटन में मुझे सन्देह का कोई कारण प्रतीत नहीं होता, जिसकी जमाअत को हर कोई जानता है। मैं उनकी चन्दों की आय को जिस का अनुमान वह ₹5200 बयान करते हैं और जो मात्र धार्मिक कार्यों में व्यय होती है धारा 5(E) के अन्तर्गत आयकर से मुक्त करता हूँ।

हस्ताक्षर एफ.टी.डिक्सन

कलक्टर

17-9-1898

नोट - जिस पुस्तक पर लेखक के हस्ताक्षर और मुहर न हो तो वह पुस्तक चोरी की समझी जाएगी।

लेखक- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

दिनांक - 20 अक्टूबर 1898 ई.